E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 102 | प्रयागराज, सोमवार 29 जून, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

अमेरिका ने ईरान के मिसाइल-ड्रोन ठिकानों पर हमला किया, ईरान ने अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया, कहा- सीजफायर तोड़कर पछताएगा

तेहरान। अमेरिका ने शुक्रवार को ईरान पर करीब एक घंटे तक हमले किए। अमेरिकी सेना ने मिसाइल-ड्रोन ठिकानों और तटीय रडार साइट्स को निशाना बनाया। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा कि ईरान ने सीजफायर तोड़ा, इसलिए जवाबी कार्रवाई की गई। अमेरिकी सेंट्रल कमांड (CENTCOM) के मुताबिक, 25 जून को ईरान ने होर्मुज स्ट्रेट में सिंगापुर के कार्गो शिप 'एमवी एवर लवली' पर ड्रोन हमला किया था। दूसरी ओर, ईरान की सरकारी न्यूज एजेंसी आईआरएनए के मुताबिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स (आईआरएनए) की नौसेना ने दावा किया है कि उसने जवाब में क्षेत्र में मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया है। ईरान की संसद के सदस्य इब्राहिम अजीजी ने एक्स पर लिखा कि अमेरिका ने एक बार फिर बातचीत के बीच ईरान पर हमला किया है। युद्धविराम का यह उल्लंघन अमेरिका के लिए पीछे हटने और पछतावे की वजह बनेगा।पिछले 24 घंटे के 5 बड़े अपडेट्सः-1. नाटो देशों पर ईरान का निशाना- ईरान ने आरोप लगाया कि अमेरिका और इजराइल के हमले में साथ देने वाले नाटो सदस्य देशों को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए।

विदेश मंत्रालय ने कहा कि इन देशों को बताना चाहिए कि उन्होंने इस सैन्य कार्रवाई का समर्थन क्यों किया। 2. होर्मुज में जहाज पर हमला, समुद्री सुरक्षा पर फिर संकट- ओमान के तट के पास होर्मुज स्ट्रेट में एक मालवाहक जहाज पर अज्ञात हथियार से हमला हुआ। जहाज के ब्रिज को नुकसान पहुंचा, हालांकि, कोई हताहत नहीं हुआ। घटना के बाद संयुक्त राष्ट्र ने 11 हजार नाविकों को निकालने का अभियान फिलहाल रोक दिया। 3. लेबनान में फिर बढ़ा तनाव- इजराइली सेना ने दक्षिणी लेबनान के अल-मंसूरी इलाके में लोगों को घर खाली करने की चेतावनी दी। वहीं, हिजबुल्लाह प्रमुख नईम कासिम ने कहा कि इजराइल को लेबनान की पूरी जमीन से बिना शर्त हटना होगा और संगठन किसी भी हाल में इजराइल से रिश्ते सामान्य नहीं करेगा। 4. ईरान-अमेरिका समझौते की दिशा में बढ़ी बातचीत- अमेरिका और ईरान के बीच तकनीकी स्तर की वार्ता पूरी हुई। दोनों देशों ने चार संयुक्त कमेटियां बनाने और 60 दिन में अंतिम समझौते का रोडमैप तैयार करने पर सहमति जताई। रूस ने भी कहा कि अंतिम समझौता होने पर वह संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में उसका समर्थन करेगा। 5. परमाणु कार्यक्रम और तेल बाजार दोनों पर नजर- आईआरएनए ने कहा कि उसकी टीम जल्द ही ईरान के परमाणु ठिकानों का निरीक्षण करेगी। दूसरी ओर, होर्मुज में तनाव के चलते कच्चे तेल की कीमतों में तेजी आई, जबकि भारत ने कमर्शियल एलपीजी की सप्लाई पर लगी पाबंदियां हटाकर आपूर्ति सामान्य करने का फैसला लिया। इजराइल-लेबनान समझौते में क्या-क्या शामिलः-अल जजीरा के मुताबिक, इजराइल और लेबनान के बीच हुए समझौते का मकसद इलाके में तनाव कम करना और धीरे-धीरे सुरक्षा व्यवस्था बदलना है। ईरानी मीडिया का दावा- अमेरिकी हमले में कोई नुकसान नहीं ईरानी मीडिया के मुताबिक सिरिक पोर्ट पर अमेरिकी हमले से कोई नुकसान नहीं हुआ है। ईरान की मेहर न्यूज एजेंसी ने पूर्वी होर्मोजगान क्षेत्र के पोर्ट चीफ के हवाले से बताया कि हमले के बाद भी सामान्य रूप से काम कर रहा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि पोर्ट के किसी भी उपकरण को नुकसान नहीं पहुंचा है, जबकि पहले वहां विस्फोटों की खबरें सामने आई थीं।

ट्रम्प अगले साल की शुरुआत में आ सकते हैं भारत, ये दूसरा भारतीय दौरा होगा

अमेरिकी विदेश मंत्री रूबियो बोले- हम मोदी के बड़े प्रशंसक

वॉशिंगटन/नई दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प साल 2027 की शुरुआत में भारत आ सकते हैं। न्यूज एजेंसी आईएएनएस के मुताबिक, व्हाइट हाउस में मीडिया से बातचीत के दौरान विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने ये बयान दिया। जब उनसे पूछा गया कि वे भारत की प्रगति, विकास और वैश्विक स्तर पर प्रधानमंत्री मोदी की भूमिका को कैसे देखते हैं, तो अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने कहा, 'हम इश मोदी और उनके द्वारा किए गए कार्यों के बहुत बड़े प्रशंसक हैं।' ये ट्रम्प की राष्ट्रपति रहते हुए दूसरी भारत यात्रा हो सकती है। इससे पहले ट्रम्प ने साल 2020 में पहली बार भारत यात्रा पर आए थे। अहमदाबाद में 'नमस्ते ट्रम्प' कार्यक्रम में शामिल हुए थे। जी7 में मोदी ने ट्रम्प से कहा- भारतीय नाविकों की सुरक्षा महत्वपूर्णः-फ्रांस के एवियन में 17 जून को दो दिवसीय 52वें जी7 समिट का आयोजन हुआ था। मोदी और ट्रम्प भी समिट में शामिल हुए थे। इस दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा- जब तक मैं प्रेसिडेंट हूं, व्हाइट हाउस में मोदी का हमेशा अच्छा दोस्त मौजूद रहेगा। अगर भारत या मोदी पर हमला होता है और मोदी लीडर होंगे तो हम उनकी मदद करेंगे। उन्होंने मोदी की तारीफ करते हुए कहा- जब तक मोदी लीडर हैं, इंडिया हर

फील्ड में बड़ा रोल निभाएगा। मोदी शांत और जबरदस्त नेता हैं, लेकिन मैं मोदी की तरह नहीं हूं। वहीं ट्रम्प के साथ द्विपक्षीय बैठक में मोदी ने कहा कि समुद्र में भारतीयों की सुरक्षा जरूरी है। उम्मीद है कि ईरान के साथ डील में भारतीयों की सुरक्षा पक्की की जाएगी। पीएम ने कहा कि होर्मुज खुला रहना जरूरी है। मैं वेस्ट एशिया में शांति की कोशिशों में ट्रम्प की लीडरशिप की तारीफ करता हूं। ट्रम्प के नेतृत्व में शांति की उम्मीद दिख रही है। भारत-अमेरिका के बीच रु12.54 लाख करोड़ का व्यापारः-भारत और अमेरिका के बीच साल 2025 में रु12.54 लाख करोड़ का व्यापार हुआ। भारत ने अमेरिका को लगभग रु8 लाख करोड़ का सामान एक्सपोर्ट किया। वहीं अमेरिका से भारत ने लगभग रु4.6 लाख करोड़ का सामान इंपोर्ट किया। भारत-अमेरिका में ट्रेड डील का खाका तैयारः-भारत-अमेरिका में फरवरी 2026 में एक अंतरिम व्यापार समझौता पर सहमति बनी थी। इसका मकसद लंबे समय से अटके व्यापारिक मुद्दों को सुलझाना था। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने ट्रम्प के कुछ टैरिफ को अवैध बता दिया। इसके बाद साफ नहीं हो रहा था कि कौन से टैरिफ लागू रहेंगे, कौन से नहीं। इसका असर अमेरिका-भारत के व्यापार समझौते पर पड़ा। अब तक अंतरिम व्यापार समझौता फाइनल नहीं हो पाया है। भारत चाहता है कि अमेरिका भारतीय वस्त्र, जेम्स-एंड-ज्वेलरी, इंजीनियरिंग सामान, दवाइयों और कृषि उत्पादों पर लगाए गए अतिरिक्त टैरिफ कम करे। वहीं अमेरिका चाहता है कि भारत अपने बाजार को अमेरिकी कृषि उत्पादों, डेयरी सामान, शराब, मेडिकल उपकरणों और डिजिटल कंपनियों के लिए और ज्यादा खोले। सबसे बड़ा विवाद कृषि क्षेत्र को लेकर है। अमेरिका चाहता है कि उसके मक्का, सोयाबीन, बादाम, सेब और दूसरे कृषि उत्पादों को भारत में ज्यादा पहुंच मिले। लेकिन भारत को डर है कि इससे भारत के करोड़ों किसानों पर असर पड़ सकता है।डेयरी सेक्टर भी एक बड़ी बाधा है। अमेरिका भारत में मांसाहारी गायों का दूध और उससे बने प्रोडक्ट बेचना चाहता है, लेकिन भारत इसके लिए तैयार नहीं है।

वेनेजुएला भूकंप

मलबे में दबे 18 दिन के बच्चे का रेस्क्यू, ढह चुकी इमारतों में अभी भी फंसे लोग

वेनेजुएला। वेनेजुएला के लागुआइरा में रेस्क्यू टीम ने शुक्रवार मच गई। पूरे देश में 39 हजार से ज्यादा लोग लापता हैं। 40 पर रेस्क्यू कैंप्स में लोगों का इलाज चल रहा है और मलबा

को 18 दिन के बच्चे को उसकी मां के साथ बिल्डिंग के मलबे से सुरक्षित बाहर निकाला। कई लोग अभी भी ढह चुकी इमारतों के नीचे दबे हुए हैं। वेनेजुएला में गुरुवार को 7.2 और 7.5 तीव्रता के दो भूकंपों से तबाही सेकेंड के अंदर राजधानी कराकस की ऊंची इमारतें मलबे के ढेर में बदल गईं। भूकंप के बाद के कई वीडियो वायरल हो रहे हैं। जहां लोग रेस्क्यू टीम्स के साथ मिलकर अपनों को ढूंढने की कोशिश कर रहे हैं। सड़कों हटाने की कोशिश अभी भी जारी है। भारत ने भी वेनेजुएला में लोगों के रेस्क्यू के लिए 'ऑपरेशन अमिस्ताद' शुरू किया है। इसके तहत वेनेजुएला में खाने-पीने का सामान और दवाइयां पहुंचाई जा रही हैं।

नागरिकता प्रमाण के मामले में थरूर बोले पासपोर्ट पर सरकार के फैसले बेतुके, इससे जनता में भ्रम फैल रहा

नयी दिल्ली। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने शुक्रवार को कहा, है कि आधार कार्ड पहचान का दस्तावेज है, नागरिकता का नहीं।

'केंद्र सरकार का ये कहना की पासपोर्ट नागरिकता का प्रमाण नहीं है, एक बेतुका कानूनी विरोधाभास है।' उन्होंने शुक्रवार को सोशल मीडिया पर लिखा कि सरकार का फैसला भ्रम पैदा कर रहा है। इसने राजनीतिक बहस शुरू कर दी है। उन्होंने कहा, 'हमेशा से पासपोर्ट को सबसे विश्वसनीय सरकारी पहचान दस्तावेज माना जाता रहा है। अगर पासपोर्ट से देश के भीतर नागरिकता साबित नहीं होती, तो फिर किस दस्तावेज से होगी।' दरअसल, विदेश मंत्रालय ने 24 जून को जारी आदेश में कहा कि पासपोर्ट नागरिकता का प्रमाण नहीं, सिर्फ एक यात्रा दस्तावेज है। इससे पहले एसआईआर से जुड़ी सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट भी कह चुका थरूर का सुझाव- पासपोर्ट और आधार कार्ड को नागरिकता प्रमाण माना जाए-थरूर ने कहा, 'पासपोर्ट और आधार कार्ड दोनों को नागरिकता का अंतिम प्रमाण माना जाना चाहिए, जब तक कि सरकार उन्हें रद्द या वापस न ले।' 'भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (यूआईडी एआई) गैर-भारतीय निवासियों के लिए अलग पहचान वाला आधार कार्ड जारी करे। इससे सामान्य भारतीय आधार कार्ड और वैध भारतीय पासपोर्ट को नागरिकता के पर्याप्त प्रमाण के रूप में स्वीकार किया सकेगा। एसआईआर की जगह एनसीआर (या एसआईआर - आपके मूल संदर्भ के अनुसार) में होने वाले विवाद कम होंगे, प्रशासनिक कामकाज आसान होगा और नागरिकों को अपनी पहचान और नागरिकता को लेकर कानूनी स्पष्टता मिलेगी। पासपोर्ट विवाद पर बयानः-अमित मालवीय (बीजेपी नेता और आईटी सेल के प्रमुख): उन्होंने साफ किया कि सरकार ने कोई नया नियम नहीं बनाया है, बल्कि यह पुराना कानून ही है। उन्होंने कहा कि सरकार ने इसके समर्थन में पासपोर्ट अधिनियम, 1967 की धारा 20 का हवाला दिया, जिसके तहत विशेष परिस्थितियों में जनहित में गैर-नागरिकों को भी भारत सरकार पासपोर्ट जारी कर सकती है। कपिल सिब्बल (वरिष्ठ वकील और राज्यसभा सांसद): अगर पासपोर्ट नागरिकता का दस्तावेज नहीं है, तो फिर नागरिकता का प्रमाण कौन सा दस्तावेज है? बूथ लेवल ऑफिसर (बीएलओ) मेरी नागरिकता पर संदेह कर सकता है। जावेद अख्तर (मशहूर गीतकार और लेखक): उन्होंने विदेश मंत्रालय के इस बयान को पूरी तरह तर्कहीन बताया। उन्होंने कहा कि क्या मंत्रालय गैर-भारतीय नागरिकों को भी भारतीय पासपोर्ट जारी कर रहा है जो वह ऐसा बयान दे रहा है? सरकार ने पासपोर्ट की संख्या को लेकर क्या कहा है? मंत्रालय ने बताया कि पिछले एक दशक में पासपोर्ट सेवा केंद्र और संबंधित सुविधाओं की संख्या 77 से बढ़कर 545 हो गई है।

सीएम शुभेंदु अधिकारी बोले- बंगाल में यूसीसी लागू होगा,लैंड जिहाद, लव जिहाद हर तरह के जिहाद पर कानून लाएंगे, घुसपैठियों को वापस भेजेंगे

कोलकाता।पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने कहा कि उनकी सरकार राज्य में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करेगी। लैंड जिहाद, लव जिहाद और जबरन धर्मांतरण के खिलाफ सख्त

कानून भी लाया जाएगा। उन्होंने कहा कि जो लोग अवैध तरीके से भारत में आए हैं। देश की संस्कृति या राष्ट्रीय सुरक्षा के खिलाफ गतिविधियों में शामिल हैं, उन्हें राज्य में रहने नहीं दिया जाएगा। अवैध घुसपैठियों की पहचान कर उन्हें उनके देश वापस भेजा जाएगा। वंदे मातरम् के 150 साल पूरे होने पर कोलकाता के रवींद्र सदन में आयोजित कार्यक्रम के दौरान शुभेंदु ने ये बातें कही।सुभेंदु के स्पीच की 4 मुख्य पॉइंट्स-सीमा सुरक्षा मजबूत करने के लिए आवश्यक जमीन उपलब्ध कराई गई है। सीमावर्ती जिलों में होल्डिंग सेंटर बनाए गए हैं, जहां अवैध घुसपैठियों की पहचान कर उन्हें उनके मूल स्थान पर भेजा जाएगा। धार्मिक उत्पीड़न के कारण भारत आए हिंदू शरणार्थी घुसपैठिए नहीं हैं। ऐसे लोगों को नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) के तहत भारतीय नागरिकता दी जाएगी। सेना के अपमान की अनुमती नहीं- जो लोग भारतीय सेना का अपमान करते हैं, ऑपरेशन सिंदूर का विरोध करते हैं या पहलगाम आतंकी हमले पर चुप रहते हैं, उन्हें ऐसी गतिविधियां करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। श्यामा प्रसाद मुखर्जी के 'एक देश, एक विधान, एक प्रधान, एक निशान' के विचार के प्रति उनकी सरकार प्रतिबद्ध है। साथ ही बंगाल की सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय चरित्र को कमजोर नहीं होने दिया जाएगा। आपातकाल का विरोध करने वालों का सम्मान होगाः- शुभेंदु अधिकारी ने कहा कि आपातकाल का विरोध करने वालों को 9 अगस्त को सम्मानित किया जाएगा। इसके लिए 'लोकतंत्र सेनानी' समन्वय समिति बनाई जाएगी। पात्र लोगों को सरकारी मान्यता प्रमाणपत्र दिए जाएंगे। उन्होंने कहा कि सामाजिक, संवैधानिक और राष्ट्रीय मुद्दों पर सेमिनार आयोजित किए जाएंगे। प्राकृतिक आपदाओं के दौरान राहत और सामाजिक सेवा से जुड़े कार्यक्रम भी चलाए जाएंगे। कार्यक्रम के बाद अधिकारी ने भवानीपुर में भाजपा के नए कार्यालय का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि हर महीने दो दिन वह वहां लोगों से मिलकर उनकी समस्याएं सुनेंगे। बंगाल सरकार के अब तक 10 बड़े फैसले-सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) को 600 एकड़ जमीन 45 दिनों के भीतर दी जाएगी, जिससे सीमा से जुड़ा पुराना विवाद खत्म होगा। सीएए लागू करने की प्रक्रिया शुरू की। इसके तहत भारत आने वाले 7 समुदायों और 31 दिसंबर 2024 तक भारत आए लोगों को नागरिकता कानून का लाभ मिलेगा। आयुष्मान भारत योजना लागू, जिसके तहत गरीब परिवारों को 5 लाख रुपए तक का मुफ्त इलाज मिलेगा। लंबे समय से रुकी जनगणना शुरू करने का फैसला। केंद्रीय गृह मंत्रालय के जून 2025 के इस आदेश पर पिछली सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया था। सरकारी नौकरियों और शिक्षक भर्ती की तैयारी कर रहे युवाओं को उम्र सीमा में 5 साल की छूट। आईएएस, आईपीएस और डब्लूबीपीएस अफसरों को केंद्र सरकार के ट्रेनिंग प्रोग्राम में हिस्सा लेने की इजाजत दी गई। भारतीय न्याय संहिता समेत नए आपराधिक कानून लागू होंगे। ये कानून पुराने आईपीसी और सीआरपीसी की जगह लेंगे, जिन्हें पिछली सरकार ने लागू नहीं किया था। साल 2021 की चुनावी हिंसा में मारे गए 321 बीजेपी कार्यकर्ताओं के परिवारों को सरकारी नौकरी या आर्थिक मदद दी जाएगी। मदरसा विभाग और अन्य धर्मों से जुड़ी वित्तीय सहायता वाली योजनाओं को जून महीने से बंद करने का फैसला लिया गया। बिना फिटनेस सर्टिफिकेट मवेशियों की हत्या पर रोक का नोटिस जारी।

अडाणी केस तुरंत खारिज करने से अमेरिकी जज ने किआ इनकार,बोले- सिर्फ बयान से केस नहीं हटेगा,पूरा एक्सप्लेनेशन देना होगा

न्यूयॉर्क। अमेरिकी जज ने शुक्रवार को जस्टिस डिपार्टमेंट को निर्देश दिया है कि वे भारतीय बिजनेसमैन गौतम अडाणी के खिलाफ आपराधिक मामलों को वापस लेने के अपने फैसले को सही ठहराने वाली वजह बताएं। कोर्ट ने अडाणी के वकीलों द्वारा मामले को औपचारिक रूप से खारिज करने के अनुरोध पर तुरंत फैसला सुनाने से इनकार कर दिया है। फेडरल प्रॉसिक्यूटर्स यानी सरकारी वकीलों ने 18 मई को घोषणा की थी कि वे इस मामले में आगे मुकदमा नहीं चलाएंगे। मामले में अडाणी पर रिश्वतखोरी प्लान से जुड़े सिक्योरिटीज फ्रॉड और वायर फ्रॉड के आरोप थे। इसके बाद अडाणी के वकीलों ने बुधवार को ब्रुकलिन के अमेरिकी जिला जज निकोलस गराउफिस से मामले को औपचारिक रूप से खारिज करने का अनुरोध किया था। हालांकि, जज ने कहा कि प्रॉसिक्यूटर्स का नोटिस इस फैसले का पूरा एक्सप्लेनेशन नहीं देता है। गराउफिस ने कहा कि सरकार का संक्षिप्त, सपाट और निष्कर्ष निकालने वाला बयान अदालत को किसी निष्कर्ष पर पहुंचने का पर्याप्त आधार नहीं है। इसके साथ ही यह केस की बर्खास्तगी के सरकारी अनुरोध का एनालिसिस यानी जांच करने के लिए भी सही नहीं है। दो राष्ट्रपतियों के कार्यकाल के बीच फैसला बदला-अडाणी पर यह मामला 2024 में डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति जो बाइडेन के कार्यकाल के आखिरी में दर्ज किया गया था। आरोपों को हटाने का यह फैसला रिपब्लिकन राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के व्हाइट हाउस में दूसरे कार्यकाल के दौरान आया है, जहां जस्टिस डिपार्टमेंट ने एक और हाई-प्रोफाइल व्हाइट कॉलर क्रिमिनल केस को समाप्त करने की मांग की है। नूनी एक्सपर्ट्स का कहना है कि अमेरिकी जजों के पास प्रॉसिक्यूटर्स को उन मामलों को जारी रखने के लिए मजबूर करने का बहुत कम अधिकार होता है जिन्हें वे आगे नहीं बढ़ाना चाहते। हालांकि, जब तक गराउफिस इसे खारिज नहीं करते, तब तक आरोप आधिकारिक तौर पर लंबित रहेंगे। ब्रुकलिन

अमेरिकी अटॉर्नी कार्यालय के स्पोक्सपर्सन ने इस पर कोई भी बयान देने से इनकार कर दिया है। क्या है पूरा मामला और क्या हुए समझौते? गौतम अडाणी पर 2024 में आरोप लगाया गया था कि उन्होंने भारतीय सरकारी अधिकारियों को रिश्वत देने की सहमति जताई थी, ताकि अडाणी ग्रुप की एक सहायक कंपनी को सोलर एनर्जी प्लांट डेवलप करने की मंजूरी मिल सके। इसके बाद उन पर अपनी कंपनी की एंटी करप्शन प्रैक्टिसेस के बारे में आश्वस्त करने वाली जानकारी देकर अमेरिकी निवेशकों को गुमराह करने का आरोप था। हालांकि, अडाणी ग्रुप ने हमेशा इन गलत कामों से इनकार किया है और अडाणी खुद इस मामले में कभी अमेरिकी कोर्ट में पेश नहीं हुए हैं। इस मामले में अन्य मोर्चों पर ये बड़ी बातें सामने आई हैं- एसईसी के साथ सेटलमेंटः अमेरिकी सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज कमीशन (एसईसी) ने भी सिविल चार्ज लगाए थे। इसके तहत एक समझौता हुआ है, जिसमें गौतम अडाणी 6 मिलियन डॉलर और उनके भतीजे सागर अडाणी 12 मिलियन डॉलर का भुगतान करेंगे। प्रतिबंधों के उल्लंघन पर जुर्मानाः अडाणी एंटरप्राइजेस लिमिटेड ने ईरान पर लगे अमेरिकी प्रतिबंधों के कथित उल्लंघन के मामले को सुलझाने के लिए अमेरिकी ट्रेजरी डिपार्टमेंट को 275 मिलियन डॉलर देने पर अलग से सहमति जताई है। मामला अमेरिकी कानून के दायरे से बाहरः अडाणी के वकील-अडाणी के वकील रॉबर्ट गियुफ्रा ने जज गराउफिस को 24 जून को लिखे पत्र में तर्क दिया कि यह मामला अमेरिकी कानून के दायरे से बाहर का है और अभियोजक भारत में कथित तौर पर हुई रिश्वतखोरी को साबित करने में असमर्थ रहेंगे। वकील ने बताया कि अडाणी और उनके सह-आरोपियों के वकीलों ने जस्टिस डिपार्टमेंट के अधिकारियों के साथ कई बैठकें कीं और मामले की कमियों को समझाने के लिए लगभग 500 पन्नों के दस्तावेज सौंपे थे। गियुफ्रा के अनुसार, अमेरिकी जस्टिस डिपार्टमेंट का यह फैसला इस केस की कानूनी और तथ्यात्मक कमजोरियों पर सावधानीपूर्वक विचार करने को दर्शाता है। अधिकारियों और करियर प्रोसिक्यूटर्स के बीच मतभेद-पिछले महीने जज को भेजे एक लेटर में सीनियर अधिकारियों ने कहा था कि जस्टिस डिपार्टमेंट ने व्यक्तिगत प्रतिवादियों के खिलाफ इन आपराधिक आरोपों पर आगे संसाधन न लगाने का फैसला किया है। खास बात यह है कि इस केस को लाने वाले रैंक-एंड-फाइल (करियर) अभियोजकों ने इस पत्र पर हस्ताक्षर नहीं किए थे। इससे पहले पिछले साल भी वॉशिंगटन में जस्टिस डिपार्टमेंट के अधिकारियों ने न्यूयॉर्क के तत्कालीन मेयर एरिक एडम्स पर बाइडेन के कार्यकाल में लगे भ्रष्टाचार के आरोपों को करियर अभियोजकों के कड़े विरोध के बावजूद हटा दिया था, जिसके बाद कई करियर अभियोजकों ने इस्तीफा दे दिया था। फिलहाल जज ने इस मामले में अधिक जानकारी देने के लिए 13 जुलाई तक की डेडलाइन तय की है।

आधुनिक समाचार
नैनी में अवैध कोचिंग सेंटरों का जाल, छात्रों की सुरक्षा पर उठे सवाल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज, नैनी। शनिवार को नैनी क्षेत्र में बड़ी संख्या में ऐसे कोचिंग सेंटर संचालित होने की चर्चा है, जो कथित रूप से आवश्यक सुरक्षा मानकों और प्रशासनिक नियमों का पूर्ण पालन नहीं कर रहे हैं। इससे छात्रों और अभिभावकों में सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ रही है। स्थानीय जानकारी के अनुसार, कई कोचिंग संस्थानों के पास आवश्यक पंजीकरण, अग्निशमन विभाग की अनापत्ति (एनओसी) तथा अन्य सुरक्षा संबंधी व्यवस्थाओं का अभाव बताया जा रहा है। वहीं, इन संस्थानों में विभिन्न बोर्ड परीक्षाओं और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए छात्रों से शुल्क भी लिया जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि छात्रों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सभी कोचिंग संस्थानों को निर्धारित नियमों का पालन करना चाहिए। इनमें वैध पंजीकरण, अग्निशमन सुरक्षा, सुरक्षित विद्युत व्यवस्था, पर्याप्त निकास मार्ग तथा अन्य आवश्यक सुविधाएं शामिल हैं। अभिभावकों ने प्रशासन से मांग की है कि क्षेत्र में संचालित सभी कोचिंग संस्थानों की जांच कराई जाए और जो संस्थान नियमों का पालन नहीं कर रहे हैं, उनके विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जाए। साथ ही, छात्रों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की आवश्यकता पर भी जोर दिया गया है।

प्रयागराज की एडीए कॉलोनी में बिना लाइसेंस संचालित स्ट्रीट फूड दुकानों पर उठे सवाल, कार्रवाई की मांग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। शहर की एडीए कॉलोनी क्षेत्र में संचालित कुछ स्ट्रीट फूड दुकानों को लेकर स्थानीय लोगों ने आरोप लगाया है कि कई खाद्य प्रतिष्ठान बिना आवश्यक लाइसेंस एवं पंजीकरण के संचालित हो रहे हैं। लोगों का कहना है कि यदि ऐसा है तो यह खाद्य सुरक्षा मानकों और नियमों के पालन पर गंभीर सवाल खड़े करता है। स्थानीय नागरिकों ने संबंधित विभागों से मांग की है कि नगर निगम एवं खाद्य सुरक्षा विभाग क्षेत्र में संयुक्त निरीक्षण कर यह जांच करें कि सभी स्ट्रीट फूड विक्रेताओं के पास आवश्यक एफएसएसएआई (एफएसएसएआई) पंजीकरण या लाइसेंस है या नहीं। यदि किसी दुकान में नियमों का उल्लंघन पाया जाता है तो नियमानुसार कार्रवाई की जाए। विशेषज्ञों का कहना है कि खाद्य कारोबार करने वाले प्रतिष्ठानों के लिए निर्धारित श्रेणी के अनुसार एफएसएसएआई पंजीकरण या लाइसेंस आवश्यक होता है तथा स्वच्छता मानकों का पालन भी अनिवार्य है।

डीएम व एसपी ने मोहर्रम जुलूस को सकुशल एवं शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने हेतु विभिन्न जुलूस मार्गों का किया स्थलीय निरीक्षण
सुरक्षा, भीड़ प्रबंधन एवं व्यवस्थाओं का लिया जायजा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली शुक्रवार को मोहर्रम जुलूस के दृष्टिगत जनपद में

कानून-व्यवस्था, सुरक्षा एवं शांति व्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखने के उद्देश्य से जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका एवं पुलिस अधीक्षक रवि कुमार ने विभिन्न मोहर्रम जुलूस मार्गों का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान दोनों अधिकारियों ने जुलूस के निर्धारित मार्गों पर सुरक्षा व्यवस्था, भीड़ प्रबंधन, यातायात संचालन, साफ-सफाई, विद्युत व्यवस्था तथा अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं का गहनता से निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने निरीक्षण के दौरान निर्देशित किया कि जुलूस मार्गों पर किसी भी प्रकार का अतिक्रमण, अवरोध अथवा दुर्घटना की आशंका उत्पन्न करने वाली स्थिति न रहे। उन्होंने कहा कि सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए यह सुनिश्चित करें कि मोहर्रम के जुलूस में किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। पुलिस अधीक्षक ने संबंधित पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिए कि जुलूस मार्गों पर पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती रहे तथा संवेदनशील एवं भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर विशेष सतर्कता बरती जाए। उन्होंने कहा कि जुलूस के दौरान यातायात व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने के लिए प्रभावी ट्रैफिक प्लान लागू किया जाए तथा आवश्यकता पड़ने पर वैकल्पिक मार्गों की व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाए। साथ ही, सीसीटीवी कैमरों, ड्रोन एवं अन्य आधुनिक तकनीकी संसाधनों के माध्यम से सतत निगरानी रखने के निर्देश दिए गए। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने ताजियादारों एवं स्थानीय नागरिकों से संवाद स्थापित कर प्रशासन द्वारा की गई तैयारियों की जानकारी साझा की तथा सभी से आपसी भाईचारा, सामाजिक सौहार्द एवं शांति बनाए रखते हुए प्रशासन का सहयोग करने की अपील की। उन्होंने कहा कि जनपद की गंगा-जमुनी तहजीब और सौहार्दपूर्ण वातावरण को बनाए रखना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। जिलाधिकारी ने स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी संबंधित विभाग अपने-अपने दायित्वों का समयबद्ध एवं गंभीरता से निर्वहन करें। दायित्वों के निर्वहन में किसी भी प्रकार की लापरवाही या शिथिलता न की जाए। उन्होंने कहा कि प्रशासन का उद्देश्य मोहर्रम जुलूस को पूर्ण सुरक्षा, शांति एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न कराना है। निरीक्षण के दौरान सिटी मजिस्ट्रेट राम अवतार सहित संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

डीएम व एसपी ने गेंगासो गंगा पुल का किया स्थलीय निरीक्षण, शीघ्र ही भारी वाहनों के आवागमन के लिए भी होगा प्रारंभ

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शनिवार को

जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका एवं पुलिस अधीक्षक रवि कुमार

ने गेंगासो गंगा पुल का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने पुल पर कराए गए मरम्मत कार्य की गुणवत्ता, सुरक्षा मानकों एवं आवागमन की व्यवस्थाओं का जायजा लिया तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने बताया कि गेंगासो गंगा पुल वर्ष 1970 के दशक में निर्मित हुआ था। समय के साथ पुल क्षतिग्रस्त हो जाने के कारण सुरक्षा की दृष्टि से इस पर यातायात बंद कर दिया गया था। पुल की आवश्यक मरम्मत एवं सुदृढ़ीकरण का कार्य कराया गया, जो अब पूर्ण हो चुका है। जिलाधिकारी ने बताया कि मरम्मत कार्य पूर्ण होने के उपरांत पुल को फिलहाल हल्के वाहनों के आवागमन के लिए खोल दिया गया है। उन्होंने कहा कि पुल पर शेष तकनीकी परीक्षण एवं आवश्यक औपचारिकताएं पूर्ण होने के पश्चात शीघ्र ही भारी वाहनों के आवागमन के लिए भी खोल दिया जाएगा। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि पुल पर यातायात के दौरान सुरक्षा मानको का पूर्णतः पालन सुनिश्चित कराया जाए, आवश्यकता अनुसार संकेतक बोर्ड एवं अन्य सुरक्षा व्यवस्थाएं प्रभावी ढंग से संचालित रहें, जिससे किसी भी प्रकार की असुविधा या दुर्घटना की संभावना न रहे।

गेंगासो गंगा पुल के पुनः संचालित होने से रायबरेली सहित आसपास के क्षेत्रों के लोगों को आवागमन में सुविधा मिलेगी तथा व्यापारिक एवं सामाजिक गतिविधियों को भी गति प्राप्त होगी। इस मौके पर उपजिलाधिकारी लालगंज राजेश श्रीवास्तव, क्षेत्राधिकारी लालगंज सुजीत कुमार राय सहित संबंधित अधिकारी व कार्यदायी संस्था के प्रतिनिधि उपस्थित रहें।

प्रयागराज में आयोजित एमएसएमई कॉन्क्लेव में नैनी इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग सेंटर हुआ सम्मानित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। शनिवार को उत्तर प्रदेश स्टेट इंडस्ट्रियल एसोसिएशन (UPSIA) एवं इंडियन बैंक के संयुक्त तत्वावधान में 25 जून 2026 को नैनी स्थित रमांशा इन होटल एंड रिसॉर्ट में जिला स्तरीय ङ'एमएसएमई कॉन्क्लेव'ङ का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जिले के उद्योगपतियों, उद्यमियों, बैंकिंग संस्थानों, सरकारी अधिकारियों एवं औद्योगिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का उद्देश्य एमएसएमई क्षेत्र को सशक्त बनाना, उद्यमियों को सरकारी योजनाओं, बैंकिंग सुविधाओं एवं औद्योगिक विकास से जुड़े अवसरों की जानकारी उपलब्ध कराना तथा उद्योगों और औद्योगिक विकास को गति मिले। उन्होंने भविष्य में भी

उद्योगों के साथ समन्वय बनाकर गुणवत्तापूर्ण कौशल प्रशिक्षण साझा किए। इंडियन बैंक द्वारा 'MSME Advantage' विषय पर विशेष सत्र आयोजित किया गया, जबकि UPSIA की

प्रशासन के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करना था। कॉन्क्लेव के दौरान विभिन्न औद्योगिक एवं प्रशिक्षण संस्थानों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इसी क्रम में ङनैनी इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग सेंटर (आईटीसी) को उद्योगों की आवश्यकता के अनुरूप ङकुशल श्रमिक (Skilled Labour Trainees) तैयार करने और स्थानीय युवाओं को रोजगारपरक तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करने के उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया।सम्मान ग्रहण करते हुए संस्थान के प्रतिनिधियों ने कहा कि उनका उद्देश्य उद्योगों की मांग के अनुरूप प्रशिक्षित मानव संसाधन तैयार करना है, जिससे स्थानीय युवाओं को बेहतर रोजगार के अवसर प्राप्त हों और क्षेत्र के उपलब्ध कराने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। कार्यक्रम में एडीएम फाइनेंस श्रीमती विनीता सिंह, प्रोजेक्ट डायरेक्टर एमएसएमई ग्लोबल श्रीमती विभा मिश्रा, जॉइंट डायरेक्टर एमएसएमई श्री एल.बी.एस. यादव, जॉइंट कमिश्नर इंडस्ट्रीज श्री अजय चौरसिया, इंडियन बैंक की जीएम श्रीमती ममता कुमारी, एजीएम श्री अवधेश कुमार पुरबे, यूपीसीडा के रीजनल मैनेजर श्री संतोष कुमार, वरुण बेवरेजेज की जीएम श्रीमती प्रेरणा तथा ळझ्एर्ए के अध्यक्ष श्री अरविंद राय सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में एमएसएमई योजनाओं, बैंकिंग सुविधाओं, डिजिटल फाइनेंस, महिला उद्यमिता, स्टार्टअप एवं औद्योगिक विकास जैसे विषयों पर विशेषज्ञों ने अपने विचार उपलब्धियों एवं औद्योगिक विकास में उसकी भूमिका पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया। समारोह के अंत में विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले संस्थानों एवं सदस्यों को स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित किया गया। धन्यवाद ज्ञापन प्रयागराज इनोवेटिव यूपी चेयरमैन श्री प्रिंस जायसवाल ने प्रस्तुत किया। यह कॉन्क्लेव बैंक, प्रशासन, उद्योग एवं प्रशिक्षण संस्थानों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल साबित हुआ। विशेष रूप से नैनी इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग सेंटर को मिला सम्मान इस बात का प्रमाण है कि कुशल मानव संसाधन तैयार करने वाले संस्थान प्रदेश के औद्योगिक विकास और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

आरक्षित वन क्षेत्र के संबंध में दावा प्रस्तुत करने हेतु जनसामान्य को सूचना

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शनिवार को वन बंदोबस्त अधिकारी/उप जिलाधिकारी (न्यायिक), रायबरेली द्वारा आरक्षित वन घोषित किए जाने संबंधी अधिसूचना जारी की गई है। भारतीय वन अधिनियम-1927 की धारा-4 के अंतर्गत उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जारी विज्ञप्ति संख्या 1983/14-2-2014-4(1)/2014 दिनांक 18 जुलाई 2014 के अनुसार अनुसूची में तहसील सदर रायबरेली के ग्राम लोधवारी स्थित 45 विभिन्न गाटा संख्याओं की कुल 145.4340 हेक्टेयर भूमि एवं तहसील महराजगंज के ग्राम जमुरावा स्थित 87 विभिन्न गाटा संख्याओं की कुल 40.7270 हेक्टेयर भूमि को आरक्षित वन के रूप में गठित करने का विनिश्चित किया गया है। इसके अनुपालन में अधिनियम की धारा-6 की आवश्यकता को पूरा करने के लिए यह घोषित किया जाता है कि उक्त भूमि के आरक्षित वन बन जाने से यह परिणाम होगा कि वन विभाग की आज्ञा या अनुमति बिना इन क्षेत्रों में प्रवेश करना। किसी भूमि पर अधिकार करना। आग लगाना ले जाना या जलाना। पशु चराना, वृक्षों की कटाई या क्षति पहुंचाना, पत्थर खोदना, सूचना या कोयला जलाना आदि। भूमि को खेती योग्य बनाना तथा वन्य जीवों को किसी भी प्रकार की हानि पहुंचाना प्रतिबंधित होगा। इन कार्यों के करने वालों के विरुद्ध भारतीय वन अधिनियम-1927 की धारा-26(1) के तहत दण्डित किया जाता सकता है।

उन्होंने सर्व साधारण को यह भी सूचित किया है कि यदि किसी व्यक्ति का उक्त भूमि पर भारतीय वन अधिनियम, 1927 की धारा-5 एवं धारा-8 के अंतर्गत वर्णित किसी अधिकार पर दावा समझता है हो, तो वह इस विज्ञप्ति के प्रकाशन की तिथि से 03 माह के भीतर वन बन्दोबस्त अधिकारी, रायबरेली के समक्ष व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर अथवा लिखित रूप में अपना दावा प्रस्तुत कर सकता है।

ज्येष्ठ पूर्णिमा पर डलमऊ वीआईपी गंगा घाट में होगा भव्य गंगा आरती आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शनिवार को प्रभागीय निदेशक/सदस्य संयोजक, जिला गंगा समिति रायबरेली प्रखर मिश्र ने बताया है कि भारतीय संस्कृति, सभ्यता और आध्यात्मिक परंपराओं की जीवनदायिनी धारा मां गंगा के प्रति श्रद्धा, आस्था एवं जन-जागरूकता को समर्पित एक भव्य गंगा आरती कार्यक्रम का आयोजन 29 जून 2026, सायं 06:30 सोमवार को मा0 जनप्रतिनिधिगण की गरिमामयी उपस्थिति में डलमऊ वीआईपी गंगा घाट पर गंगा महा आरती का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया है कि मां गंगा केवल एक नदी नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना, आध्यात्मिक विरासत और लोकजीवन की आधारशिला हैं। सदियों से गंगा ने हमारी सभ्यता को पोषित किया है तथा सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को सशक्त बनाने का कार्य किया है। गंगा के तटों पर विकसित हुई संस्कृति ने विश्व को मानवता, सहअस्तित्व, पर्यावरण संरक्षण और आध्यात्मिकता का संदेश दिया है।उन्होंने बताया है कि इस अवसर पर आयोजित होने वाली भव्य गंगा आरती न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक होगी, बल्कि गंगा स्वच्छता, निर्मलता एवं अविरलता के प्रति जनसामान्य को जागरूक करने का भी माध्यम बनेगी। कार्यक्रम के दौरान गंगा संरक्षण एवं पर्यावरण संवर्धन से जुड़े संदेशों का प्रसार किया जाएगा, जिससे समाज में गंगा के प्रति दायित्वबोध और सहभागिता की भावना को और अधिक बल मिल सके। प्रभागीय निदेशक/सदस्य संयोजक, जिला गंगा समिति रायबरेली द्वारा जनपदवासियों, सामाजिक संगठनों, युवा वर्ग, विद्यार्थियों, महिलाओं एवं श्रद्धालुओं से अपील करते हुए कहा गया कि ये इस पावन अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर मां गंगा के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित करें तथा गंगा की गौरवशाली सभ्यता, संस्कृति और संरक्षण के संकल्प को जन-जन तक पहुंचाने में सहभागी बनें। ज्येष्ठ पूर्णिमा के शुभ अवसर पर दीपों की अलौकिक आभा, वैदिक मंत्रोच्चार और भक्ति भाव से ओत-प्रोत यह भव्य गंगा आरती जनमानस के लिए एक अविस्मरणीय आध्यात्मिक अनुभव होगी। जिला गंगा समिति रायबरेली सभी श्रद्धालुओं एवं नागरिकों का इस आयोजन में हार्दिक स्वागत करती है तथा कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सह?भागिता का आग्रह करती है।'मां गंगा हमारी आस्था, संस्कृति और पहचान हैं। आइए, गंगा आरती में सहभागी बनकर गंगा संरक्षण एवं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के संवर्धन का संकल्प लें।'

सम्राट महापद्मनंद बुद्ध विहार गौरीगंज में शुरू हुआ बुद्ध चरित मानस का अखंड पारायण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) गौरीगंज/अमेठी। शनिवार को सम्राट महापद्मनंद बुद्ध विहार

गौरीगंज में के पी सविता बौद्ध द्वारा रचित बुद्ध चरित मानस के अखंड पारायण की पहले दिन शुरूआत हुई।कार्यक्रम की शुरूआत बौद्ध भिक्षु प्रज्ञा मित्र प्रबंधक सिरमौर बुद्ध विहार गंगौली सोइया अमेठी द्वारा पारायण के आयोजक के पी सविता बौद्ध पूर्व प्रधानाध्यापक एवं रचयिता बुद्ध चरित मानस प्रबंध काव्य और महामंत्री भारतीय बौद्ध महासभा 30 प्र0 शाखा जनपद अमेठी को त्रिशरण पंचशील ग्रहण कराकर हुई। इसके बाद बुद्ध पूजा वंदना कराई गयी। कार्यक्रम के संयोजक भंते धम्म दीप नुवावां एवं अध्यक्ष सिरमौर बुद्ध विहार गंगौली सेवा संस्थान गंगौली सोइया अमेठी रहे। इस अवसर पर भंते शीलरतन कोषाध्यक्ष बुद्ध विहार सेवा संस्थान गंगौली ने भी सहयोगी भंते की भूमिका निभाई।

साढ़े बारह बजे से अखंड पारायण की मेन प्रक्रिया जारी हुई। इस अवसर पर आर बी चक्रवर्ती पूर्व शाखा प्रबंधक ग्रामीण बैंक, बौद्धाचार्य कंधई राम बौद्ध, श्याम लाल भारती, रामफल फौजी सचिव सिरमौर बुद्ध विहार गंगौली सोइया अमेठी, नीरज बौद्ध, गुरु प्रसाद बौद्धाचार्य, रामबहादुर शर्मा पूर्व प्रधानाध्यापक,घनश्याम शर्मा, प्रेम प्रकाश शर्मा, मंतेश शर्मा आदि रहे।

डीएम-एसपी ने थाना दिवस पर सुनी लोगों की शिकायतें,जनसमस्याओं के त्वरित निस्तारण के दिए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शनिवार को थाना

समाधान दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका व पुलिस अधीक्षक रवि कुमार

ने थाना लालगंज पहुँचकर नागरिकों की समस्याएं सुनीं। थाना दिवस के दौरान विभिन्न प्रकरणों में भूमि विवाद, पारिवारिक, राजस्व संबंधी शिकायते व सड़क एवं सार्वजनिक सुविधाओं से जुड़ी शिकायतें प्राप्त हुईं। जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने संबंधित राजस्व एवं पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी शिकायतों का गंभीरता से संज्ञान लेते हुए टीम बनाकर मौके पर जाकर गुणवत्तापूर्ण और समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। जिलाधिकारी ने अधिकारियों से कहा कि जनता की समस्याओं के समाधान में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि थाना समाधान दिवस का उद्देश्य जनता को त्वरित न्याय उपलब्ध कराना है, इसलिए अधिकारी मौके पर उपस्थित होकर शिकायतों का निस्तारण प्राथमिकता से करें। थाना दिवस में उपजिलाधिकारी लालगंज राजेश श्रीवास्तव, क्षेत्राधिकारी लालगंज सुजीत कुमार राय सहित पुलिस/राजस्व विभाग के कार्मिक मौजूद रहे।

ब्यौहारी पुलिस की बड़ी सफलता 1 क्विटल 27 किलोग्राम गांजा(मादक पदार्थ) की कार्यवाही

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) ब्यौहारी। शनिवार को शहडोल पुलिस व्दारा नशे के खिलाफ लगातार अभियान चलाकर कार्यवाही की जा रही है इसी क्रम मे ब्यौहारी पुलिस को नशे के खिलाफ एक बड़ी कार्यवाही करने मे सफलता प्राप्त हुई है। मामले के संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि दिनांक 27.06.2026 को रेड कार्यवाही के दौरान मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि एक सफेद रंग की बिटारा ब्रेजा कार क्रमाक सीजी 13 एए 7494 मे अबैध मादक पदार्थ गांजा लेकर मानपुर तरफ से ब्यौहारी की ओर ब्रिकी करने हेतु जा रहा है जो हमराह स्टाफ के ब्यौहारी मानपुर रोड मे फारेस्ट हाउस के पास रेड कार्यवाही हेतु घेराबंदी किया

गया जो आरोपी दूर से पुलिस की गाड़ी देखकर कार को दूर छोड़कर जंगल तरफ भाग गये जो कार के अंदर तलासी ली गयी तो कार के अंदर से 04 काले रंग की बोरी रखी हुई मिली जिससे खोलकर देखा गया तो बोरी के अंदर छोटे छोटे पैकेट मे गांजा(मादक पदार्थ) रखा हुआ मिला जिसे मौके पर वजन कराया गया जिसकी कुल वजन 1 क्विटल 27 किलोग्राम गांजा(मादक पदार्थ) का होना पाया जिसकी कुल किमत 12 लाख 70 हजार रुपये का होना पाया गया है जो अज्ञात आरोपी के विरूद्ध अपराध धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। उक्त कार्यवाही श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय शहडोल श्री रामजी श्रीवास्तव एव अति0 पुलिस। अधीक्षकश्री अभिषेक दीवानके मार्गदर्शन एसडीओपी श्री मुकेश आविद्रा के दिशा निर्देशन मे थाना ब्यौहारी पुलिस व्दारा की गयी है कार्यवाही मे थाना ब्यौहारी के निरी. थाना प्रभारी जियाउल हक एव अधिनस्थ स्टाफ उनि बालकरण प्रजापति, प्र.आर. हीरा सिंह , प्रआर नरेन्द्र उपाध्याय आर. 762 गंगा सागर गुप्ता, आर. रामजी गौतम, आर पंकज, आर. विवेक सूर्या, आर, ऋषभ शुक्ला एव आर शंकर सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

जिलाधिकारी ने गोठानी शिव मंदिर में की पूजा-अर्चना, पर्यटन विकास कार्यों का किया निरीक्षण

गोठानी शिव मंदिर को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने हेतु तैयार होगी व्यापक कार्ययोजना,मंदिर मार्ग के सड़क निर्माण में देरी पर जिलाधिकारी नाराज, तत्काल कार्य प्रारंभ कराने के निर्देश, भूमि मुआवजा वितरण के लिए सोमवार से तहसील में कैंप लगाने के निर्देश, प्रस्तावित बंधी निर्माण स्थल का निरीक्षण, किसानों के हितों को प्राथमिकता देने के निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिलाधिकारी ने शनिवार को गोठानी स्थित प्राचीन शिव मंदिर पहुंचकर विधिवत पूजा-अर्चना की तथा जनपदवासियों के सुख, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। इसके उपरांत उन्होंने गोठानी शिव मंदिर को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किए जाने हेतु प्रस्तावित कार्यों का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण

के दौरान जिलाधिकारी ने पर्यटन विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि गोठानी शिव मंदिर को एक आकर्षक धार्मिक एवं पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए ऐसी समग्र कार्ययोजना तैयार की जाए, जिससे श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों को बेहतर मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हो सकें और क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा मिले। इस दौरान जिलाधिकारी ने गोठानी शिव मंदिर तक पहुंचने हेतु स्वीकृत नवनिर्मित सड़क का कार्य अब तक प्रारंभ न होने पर नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने अधिशासी अभियंता, निर्माण खंड को निर्देशित किया कि सड़क निर्माण का कार्य तत्काल प्रारंभ कराया जाए। साथ ही उप जिलाधिकारी ओबरा श्री विवेक कुमार सिंह को निर्देश दिए कि जिन किसानों की भूमि सड़क निर्माण में अधिग्रहित हुई है, उन्हें मुआवजा वितरण हेतु सोमवार से तहसील में विशेष कैंप आयोजित कर धनराशि का वितरण सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि इस कार्य में किसी प्रकार की शिथिलता स्वीकार नहीं की जाएगी।

इसके पश्चात जिलाधिकारी ने भूमि संरक्षण विभाग द्वारा प्रस्तावित नई बंधी के निर्माण स्थल का निरीक्षण किया। उन्होंने भूमि संरक्षण अधिकारियों को निर्देशित किया कि बंधी का निर्माण वैज्ञानिक एवं तकनीकी मानकों के अनुरूप कराया जाए, जिससे अधिक से अधिक किसानों को सिंचाई एवं जल संरक्षण का लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि बंधी निर्माण की कार्ययोजना को अंतिम रूप देने से पूर्व उसकी थर्ड पार्टी से तकनीकी जांच कराई जाएगी। साथ ही स्पष्ट निर्देश दिए कि निजी व्यक्तियों की भूमि पर जिला खनिज फाउंडेशन न्यास (डीएमएफ) के माध्यम से किसी भी प्रकार की स्वीकृति प्रदान नहीं की जाएगी।

निरीक्षण के दौरान उप जिलाधिकारी ओबरा श्री विवेक कुमार सिंह, भूमि संरक्षण अधिकारी रॉबर्ट्सगंज, भूमि संरक्षण अधिकारी चोपन, जिला कृषि रक्षा अधिकारी श्री संतपाल वर्मा सहित अन्य जनपद स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री को ज्ञापन देने जा रहे हैं सपा नेताओं व कार्यकर्ताओं को सेक्टर 104 में पुलिस ने रोका

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सपा नोएडा महानगर संगठन द्वारा शनिवार को महानगर अध्यक्ष डॉक्टर आश्रय गुप्ता की अध्यक्षता में नोएडा महानगर की विभिन्न समस्याओं को लेकर ज्ञापन के माध्यम से मुख्यमंत्री को अवगत कराने जा रहे थे लेकिन नोएडा महानगर के सभी नेताओं व कार्यकर्ताओं को सेक्टर 104 की रेड लाइट के पास भारी पुलिस बल द्वारा बैरिकेड लगाकर रोक दिया गया साथी ही साथ मुख्यमंत्री के कार्यक्रम तक उनको नजर बंद कर दिया गया महानगर अध्यक्ष डॉ आश्रय गुप्ता ने कहा कि यह पूरी तरीके से लोकतंत्र व संविधान की हत्या है। उन्होंने कहा कि नोएडा महानगर संगठन नोएडा महानगर की आम लोग किसान मजदूर छोटे व्यापारी छात्र वह पीड़ित लोगों की आवाज मुख्यमंत्री तक पहुंचाना चाहते थे ताकि इसका समाधान जल्द से जल्द हो सके लेकिन उनको बीच में ही रोक कर सरकार क्या दिखाना चाहती है। डॉक्टर गुप्ता ने कहा कि जी नोएडा विकास प्राधिकरण की बिल्डिंग का उद्घाटन मुख्यमंत्री करने आ रहे हैं उसकी न्यूज़ 2016 में समाजवादी पार्टी के

राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के द्वारा रखा गया और जो बिल्डिंग 2018-19 तक तैयार होनी थी उसके काम को रोक दिया गया और अब यह 2027 में उसका उद्घाटन करने आ रहे हैं जो की दुर्भाग्यपूर्ण है ।महासचिव विकास यादव व मीडिया प्रभारी गौरव कुमार यादव ने कहा कि सरकार तानाशाही कर रही है हम लोक शांतिपूर्वक ज्ञापन के माध्यम से नोएडा के आम लोगों की समस्या मुख्यमंत्री तक पहुंचाना चाहते थे लेकिन हमें ऐसा भी करने नहीं दिया गया एक मुख्य विपक्षी पार्टी होने के नाते आम लोगों की समस्या को उठाना यह हमारा कर्तव्य है वह हमारा हक भी है।कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य लोगों में डॉक्टर आश्रय गुप्ता, विकास यादव ,फकीरचंद नागर, मोनू खारी, गौरव कुमार यादव, विनोद यादव, राणा मुखर्जी रामवीर यादव ,बाबूलाल बंसल ,मनोज गोयल, बबली शर्मा, लोकेश यादव, अंकुर यादव, अमित भाटी ,कवित गुर्जर ,बब्बू यादव, गौरव यादव ,मोहित यादव, संजय यादव, राकेश यादव, रोहित यादव देवपाल यादव, गुड्डू ,कुलदीप कसाना, बिट्टू, रवि भाटी महेश जाटव, कृपा शंकर यादव, निरोगी सिंह मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। प्रदेश उपाध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी उत्तर प्रदेश

का दायित्व प्राप्त होने के उपरांत प्रयागराज के प्रथम आगमन पर आयोजित भव्य स्वागत एवं अभिनंदन समारोह में आप सभी का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन। आप सभी का स्नेह, आशीर्वाद एवं आत्मीय उपस्थिति इस अवसर को और अधिक गरिमामय बनाएगी। आइए, संगठन, सेवा और राष्ट्र निर्माण के संकल्प को और अधिक सशक्त करें।

राजकीय आऔधोगिक प्रशिक्षण संस्थान रायबरेली में शिक्षुता मेले का आयोजन।

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान रायबरेली के प्रधानाचार्य विवेक कुमार तिवारी ने सूचित किया है कि दिनांक 30 जून 2026 को शिक्षुता मेले का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें राजकीय आई .टी. आई .गोराबाजार रायबरेली द्वारा अप्रेंटिस एक्ट 1961 के अंतर्गत कुल 06 सीटों पर 12 माह के अप्रेंटिस प्रशिक्षण हेतु आई टी आई ट्रेड - स्टेनो हिंदी, मैकेनिक मोटर व्हीकल , ड्राफ्ट्समैन मैकेनिक, फिटर,कोपा, इंस्ट्रूमेंट मैकेनिक तथा लेरनर्न प्राइवेट लिमिटेड (गुरुग्राम एवं गुजरात यूनिट) में अप्रेंटिस हेतु ट्रेड - फिटर, डीजल, ट्रैक्टर , मोटर मैकेनिक वेल्डर , टूल एंड डाई, मशीनिस्ट टर्नर, रेफ्रिजरेशन एंड एयरकंडीशन , डिप्लोमा इन मैकेनिकल इंजीनियरिंग से उत्तीर्ण अभ्यर्थियों के आवेदन फॉर्म अप्रेंटिस मेले के माध्यम से आमंत्रित किये जा रहे हैं। उक्त व्यवसाय से आई .टी. आई. उत्तीर्ण प्रमाण पत्र अभ्यर्थी अप्रेंटिस पोर्टल रजिस्ट्रेशन प्रिंट,अपने शैक्षिकअंक पत्रों एवं तकनीकी प्रमाण पत्रों की छाया प्रति ,आधार कार्ड,बैंक पासबुक की फोटो कॉपी, जाति एवं निवास प्रमाण पत्र, आधार की प्रति , पासपोर्ट साइज फोटो आदि लेकर दिनांक 30 जून 2026 को प्रातः 10: 00 बजे से 4:00 बजे तक नोडल राजकीय आई .टी .आई. गोराबाजार रायबरेली में सम्मिलित हो सकते हैं।

मुख्य विकास अधिकारी ने विकास भवन परिसर से पल्स पोलियो जनजागरूकता रैली को दिखाई हरी झंडी,प्रत्येक बच्चे तक पोलियो की दो बूंद पहुंचाना हम सभी की जिम्मेदारी- मुख्य विकास अधिकारी

28 जून से शुरू हुआ सघन पल्स पोलियो महाअभियान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। सघन पल्स पोलियो महाअभियान के सफल

संचालन एवं जनजागरूकता के उद्देश्य से शनिवार को विकास भवन परिसर से पल्स पोलियो जनजागरूकता रैली का आयोजन किया गया। रैली को

मुख्य विकास अधिकारी श्रीमती जागृति अवस्थी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली में स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी, आशा कार्यकर्त्रियाँ, आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियाँ, विभिन्न विभागों के कर्मचारी तथा स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग किया। रैली को संबोधित करते हुए मुख्य विकास अधिकारी जागृति अवस्थी ने कहा कि पल्स पोलियो अभियान केवल स्वास्थ्य विभाग का कार्यक्रम नहीं, बल्कि जनसहभागिता का महाअभियान है। उन्होंने सभी अभिभावकों से अपील की कि 0 से 5 वर्ष तक के प्रत्येक बच्चे को पोलियो की खुराक अवश्य पिलाएं तथा अभियान को सफल बनाने में अपना सहयोग दें। उन्होंने कहा कि जनप्रतिनिधि, ग्राम पंचायतें, स्वयं सहायता समूह, आंगनबाड़ी एवं आशा कार्यकर्त्रियाँ अभियान को घर-घर तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं, जिससे कोई भी बच्चा पोलियो की दवा से वंचित न रहे। मुख्य विकास अधिकारी ने बताया कि 28 जून 2026 को जनपद के सभी निर्धारित पोलियो बूथों पर प्रातः 9:00 बजे से सायं 4:00 बजे तक 0 से 5 वर्ष तक के बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई जाएगी। इसके उपरांत स्वास्थ्य विभाग की टीमें घर-घर जाकर छूटे हुए बच्चों को पोलियो की दवा पिलाएंगी। उन्होंने जनपदवासियों से अपील की कि अपने बच्चों को निकटतम पोलियो बूथ पर अवश्य लेकर आएं और पोलियो मुक्त भारत के संकल्प को साकार करने में सक्रिय सहभागिता निभाएं।

उद्यान विभाग की विभिन्न योजनाओं हेतु आवेदन आमंत्रित

''पहले आओ पहले पाओ'' पद्धति के आधार पर लाभ कर सकते है प्राप्तः जिला उद्यान अधिकारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। शनिवार को जिला उद्यान अधिकारी जयराम वर्मा ने बताया है कि उद्यान विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का लाभ प्राप्त करने के लिए इच्छुक कृषक ''विभागीय पोर्टल https://dbt.uphorticulture.gov.in पर पंजीकरण कराकर वर्ष 2026-27 में निदेशालय द्वारा प्राप्त लक्ष्यों के सापेक्ष ''पहले आओ पहले पाओ'' पद्धति के आधार पर लाभ प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया है कि मुख्यमंत्री राज्य औद्यानिक विकास योजनान्तर्गत 35 से 50 प्रतिशत तक अनुदान अनुमन्य है। योजनान्तर्गत सामान्य एवं अनुसूचित जाति के कृषकों हेतु रेगुलर स्पेसिंग (आम, अमरूद, लीची, अनार आदि) 02 हे0, हाई डेन्सिटी (आम, अमरूद, लीची, अनार आदि) 02 हे0, प्याज क्षेत्र विस्तार 05 हे0, उच्च मूल्य वाली संगध फसलें (बेला, रोजमरी, जेरेनियम आदि) 01 हे0, बल्ब एवं राइजोमैटिक पुष्प 02 हे0, लूज फ्लवार गेंदा 20 हे0, ईको फ्रेन्डली लाइट ट्रैप 10, मचान 02 हे0, मल्चिंग 05 हे0, मसाला सीड्स धनिया 2 हे0, ट्रैक्टर (2 डब्ल्यूडी) 01 पावर टिलर 08 बीएचपी से कम 01, पावर टिलर 08 बीएचपी से अधिक 01, संकर शाकभाजी क्षेत्र विस्तार 80 हे0, लो कास्ट मशरूम उत्पादन इकाई 2, मौनपालन 7, एच.डी.पी.ई. वर्मी बेड 2, फेन्सिंग 3000 रनिंगमीटर का लक्ष्य प्राप्त है। उन्होंने बताया कि अनुसूचित जाति/जनजाति के कृषकों हेतु औद्यानिक विकास योजनान्तर्गत 75 से 90 प्रतिशत तक अनुदान अनुमन्य है। संकर कद्दू वर्गीय 9.00 हे0, संकर टमाटर 09 हे0, मसाला मिर्च 06.50 हे0, संकर शिमला मिर्च 02 हे0, प्याज 04 हे0, लहसुन 01 हे0, रोज कटिंग 0.50 हे0, गेंदा 03 हे0, आईपीएम 05 हे0, पावर टिलर 08 बीएचपी तक 01 का लक्ष्य प्राप्त है।उन्होंने बताया है कि हर्बल गार्डेन योजनान्तर्गत सतावर 02 हे0, सर्पगन्धा 01 हे0 का लक्ष्य प्राप्त है, जिसमें 50 प्रतिशत तक अनुदान अनुमन्य है। ''पर ड्राप मोर क्राप'' (माइक्रोइरीगेशन) योजनान्तर्गत 65 से 90 प्रतिशत तक अनुदान अनुमन्य है। योजना के लाभ हेतु पूेः//ल्ज्स्ज.ग्ह पर पंजीकरण कर सकते हैं। ड्रिप स्प्रिंकलर 304 हे0, मिनी स्प्रिंकलर 140 हे0, माइको स्प्रिंकलर 60 हे0, पोर्टेबल स्प्रिंकलर 1014 हे0, रेनगन स्प्रिंकलर 175 हे0 का लक्ष्य प्राप्त है। उन्होंने बताया है कि प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना पी0एम0एफ0एम0ई0 योजनान्तर्गत 35 प्रतिशत तक अनुदान अनुमन्य है। खाद्य प्रसंस्करण सम्बन्धी नवीन इकाई की स्थापना एवं पूर्व में स्थापित इकाई के उच्चीकरण हेतु 1421 इकाई स्थापना का लक्ष्य प्राप्त है। योजना का लाभ प्राप्त करने के लिये https://pmfme.mofpi.gov.in पर पंजीकरण कर सकते हैं। जिला उद्यान अधिकारी ने बताया है कि पंजीकरण हेतु आधार कार्ड, बैंक पासबुक, खतौनी की फोटोकापी तथा एक फोटो अनिवार्य है। अधिक जानकारी हेतु कार्यालय जिला उद्यान अधिकारी, रायबरेली में किसी भी कार्य दिवस में आकर सम्पर्क किया जा सकता है।

शिक्षुता मेले का आयोजन किया जा रहा है

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान रायबरेली के प्रधानाचार्य विवेक कुमार तिवारी

ने सूचित किया है कि दिनांक 30 जून 2026 को शिक्षुता मेले का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें राजकीय आई .टी. आई .गोराबाजार रायबरेली द्वारा अप्रेंटिस एक्ट 1961 के अंतर्गत कुल 06 सीटों पर 12 माह के अप्रेंटिस प्रशिक्षण हेतु आई टी आई ट्रेड - स्टेनो हिंदी, मैकेनिक मोटर व्हीकल , ड्राफ्ट्समैन मैकेनिक, फिटर,कोपा, इंस्ट्रूमेंट मैकेनिक तथा लेरनर्न प्राइवेट लिमिटेड (गुरुग्राम एवं गुजरात यूनिट) में अप्रेंटिस हेतु ट्रेड - फिटर, डीजल, ट्रैक्टर , मोटर मैकेनिक वेल्डर , टूल एंड डाई, मशीनिस्ट टर्नर, रेफ्रिजरेशन एंड एयरकंडीशन , डिप्लोमा इन मैकेनिकल इंजीनियरिंग से उत्तीर्ण अभ्यर्थियों के आवेदन फॉर्म अप्रेंटिस मेले के माध्यम से आमंत्रित किये जा रहे हैं। उक्त व्यवसाय से आई .टी. आई. उत्तीर्ण प्रमाण पत्र अभ्यर्थी अप्रेंटिस पोर्टल रजिस्ट्रेशन प्रिंट,अपने शैक्षिकअंक पत्रों एवं तकनीकी प्रमाण पत्रों की छाया प्रति ,आधार कार्ड,बैंक पासबुक की फोटो कॉपी, जाति एवं निवास प्रमाण पत्र, आधार की प्रति , पासपोर्ट साइज फोटो आदि लेकर दिनांक 30 जून 2026 को प्रातः 10: 00 बजे से 4:00 बजे तक नोडल राजकीय आई .टी .आई. गोराबाजार रायबरेली में सम्मिलित हो सकते हैं ।

उद्योग बंधु की बैठक विकास भवन में मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता में संपन्न हुई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
सोनभद्र। शनिवार को उद्योग बंधु

की बैठक विकास भवन में मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में पूर्व में

उठाए गए मुद्दों के संदर्भ में चर्चा की गई। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार संगठन के जिला अध्यक्ष कौशल शर्मा ने कहा कि बैठक में व्यापारियों की समस्याओं का समाधान जिला प्रशासन की सकारात्मक पहल है।

मिर्जापुर डिपो की रोडवेज बस फ्लाई ओवर के नीचे से संचालित की जा रही थी उसे बंद कर डिपो से संचालित करने के आदेश का व्यापारियों ने स्वागत किया। श्री शर्मा ने कहा कि प्रत्येक वर्ष स्कूल खुलने के बाद सीबीएसई बोर्ड से संचालित स्कूलों से जारी फरमान के तहत किताबें एक ही दुकान से एनसीईआरटी की किताबों की तुलना में चौगुने दामों पर मिलती हैं।उन्होंने कहा की एनसीईआरटी विद्यालयी शिक्षा के लिए पाठ्य पुस्तकों का निर्माण करने वाली भारत सरकार की स्वायत्त संस्था है जो कक्षा 1 से 8 तक की किताबें खासकर हिंदी व्याकरण, इंग्लिश ग्रामर ,जीके, कंप्यूटर ,मोरल साइंस कम मात्रा में छापती है और इन्हीं किताबों में खेल होता है उन्होंने कहा कि हमारी मांग है कि स्कूल खुलने के कुछ दिन पूर्व स्कूल की वेबसाइट पर पर किताब का नाम, विषय, प्रकाशक का नाम, मूल्य सहित नोटिस बोर्ड पर भी चस्पा कर दिया जाय। इसकी कॉपी बेसिक शिक्षा अधिकारी एवं जिला विद्यालय निरीक्षक को भी दी जाए इसके बाद कोई संशोधित लिस्ट जारी न किया जाए।

उन्होंने कहा कि एनजीटी की एक रिपोर्ट के अनुसार सोनभद्र में औद्योगिक इकाइयों से प्रतिदिन 40 किलोग्राम मरकरी हवा में छोड़ी जा रही है अध्ययनों में पाया गया कि पेयजल नमूनो में पारा अनुमेय सीमा से उसे26 गुना अधिक है अनपरा वेक डिबुलगंज के हैंडपंप से लिए गए नमूने से .026 पी पी एम पाई गई जो सुरक्षित स्तर से 26 गुना अधिक है इन क्षेत्रों से लिए गए रक्त नमूनों में पारे की सर्वाधिक मात्रा 113.48 माइक्रोग्राम जो निर्धारित पैमाने से 20 गुना ज्यादा है। जिसके कारण लोगों के हाथ पर सुन्नपन, पक्षाघात, बोलने में कठिनाई, दृष्टि एवं श्रवण शक्ति प्रभावित होना शरीर का संतुलन बिगड़ना , गर्भस्थ शिशुओं में जन्मजात विकृतियां और असमय अनेक लोगों की मृत्यु आदि की संभावनाएं और अधिक बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि यहां संचालित तापीय विद्युत गृहों, कोयला, खनन परियोजनाओं तथा अन्य औद्योगिक इकाइयों के कारण पर्यावरण एवं जन स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंकाएं निरंतर बढ़ती जा रही है यदि समय रहते इसकी जांच एवं नियंत्रण नहीं किया गया तो आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य के लिए गंभीर दुष्प्रभाव वाले परिणाम आ सकते हैं उन्होंने ज्ञापन के माध्यम से मांग किया कि सभी औद्योगिक क्षेत्र विशेष कर अनपरा, ओबरा शक्तिनगर, बीजपुर एवं रेणुकूट क्षेत्र में प्रदूषण की स्वतंत्र एवं उच्च स्तरीय जांच करा कर इस पर तत्काल रोक लगाई जाए। बैठक में मुख्य रूप से शरद जायसवाल, विनय जायसवाल नागेंद्र मोदनवाल, नरेंद्र गर्ग, विमल अग्रवाल मनोज जालान, नवल बाजपेई, राजेश गुप्ता , धीरेन जायसवाल हाजी सलीम हुसैन,सभी व्यापार संगठन के पदाधिकारी शाहिद जिले के अधिकारी मौजूद रहे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हर्षोल्लास के साथ मनाया हिंदू साम्राज्य स्थापना दिवस उत्सव

सोनभद्र नगर स्थित रामलीला मैदान परिसर में हुआ आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
सोनभद्र। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

सोनभद्र नगर द्वारा हिंदू साम्राज्य स्थापना दिवस उत्सव के अनुक्रम में शनिवार को सोनभद्र नगर स्थित

रामलीला मैदान में हिंदू साम्राज्य स्थापना दिवस का कार्यक्रम अत्यंत हर्षोल्लास एवं उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ छत्रपति शिवाजी महाराज, परम पूजनीय डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार (डॉक्टर साहब) एवं परम पूजनीय श्री गुरुजी (माधव सदाशिव गोलवलकर) के चित्रों पर पुष्प अर्पित कर, एकल गीत एवं अमृत वचन के साथ हुआ। कार्यक्रम में प्रांत संघ चालक अंगराज, जिला संघ चालक हर्ष अग्रवाल तथा नगर संघ चालक संगम मंचासीन रहे। प्रांत संघ चालक अंगराज ने अपने बौद्धिक उद्बोधन में कहा कि हिंदू साम्राज्य दिवस केवल एक ऐतिहासिक उत्सव नहीं, बल्कि स्वराज्य, आत्मगौरव, संगठन और राष्ट्रचेतना का प्रेरणादायी पर्व है। उन्होंने कहा कि छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक भारतीय इतिहास की वह गौरवशाली घटना है, जिसने निराशा के वातावरण में समाज में आत्मविश्वास का संचार किया तथा हिंदवी स्वराज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।उन्होंने कहा कि शिवाजी महाराज ने अपने अद्वितीय पराक्रम, कुशल नेतृत्व, सुशासन, संगठन क्षमता एवं दूरदर्शी नीतियों के बल पर राष्ट्र, धर्म और संस्कृति की रक्षा का कार्य किया। उन्होंने महिलाओं के सम्मान, न्यायपूर्ण शासन, अनुशासित सेना, सुदृढ़ प्रशासन तथा समाज के प्रत्येक वर्ग को साथ लेकर चलने की नीति अपनाई, जो आज भी समाज के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने स्वयंसेवकों से आह्वान किया कि वे छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन से प्रेरणा लेकर राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए समाज में संगठन, समरसता, सेवा और राष्ट्रीय चेतना के कार्यों को गति दें तथा संघ के शताब्दी वर्ष में अधिकाधिक लोगों को राष्ट्र निर्माण के इस अभियान से जोड़ें। कार्यक्रम का सफल संचालन जिला कार्यवाह दिनेश ने किया तथा कार्यक्रम का समापन संघ की प्रार्थना के साथ हुआ। कार्यक्रम में सह नगर संघ चालक संतोष, विभाग के रामलगन, अवध, नीरज, जिला व्यवस्था प्रमुख कीर्तन, जिला प्रचार प्रमुख नीरज, नगर कार्यवाह विश्वनाथ, सह नगर कार्यवाह अनिल, नगर प्रचार प्रमुख कृष्ण प्रताप, नगर व्यवस्था प्रमुख जे.बी. सिंह, नगर शारीरिक प्रमुख नीतीश, नगर व्यवस्था प्रमुख जंग बहादुर, नगर बौद्धिक प्रमुख कृष्ण कुमार, महाविद्यालय विद्यार्थी प्रमुख आशुतोष, विद्यार्थी कार्य प्रमुख अंकित, विनय, बच्चन, ललित, विनोद, नित्यानंद, पवन, धीरज, सत्यम सहित बड़ी संख्या में स्वयंसेवक एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

चोपन में नशे के खिलाफ एकजुट हुए मेडिकल संचालक, जनजागरूकता अभियान चलाने का लिया संकल्प।

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
चोपन (सोनभद्र)। समाज को नशा मुक्त बनाने और युवाओं

को नशे की लत से दूर रखने के उद्देश्य से चोपन स्थित विजय मेडिकल पर औषधि निरीक्षक सोनभद्र एवं दवा विक्रेता समिति, चोपन-सोनभद्र के संयुक्त तत्वावधान में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में क्षेत्र के सभी मेडिकल संचालकों ने भाग लिया और नशे के दुष्प्रभावों पर विस्तार से चर्चा करते हुए जनजागरूकता अभियान को प्रभावी ढंग से चलाने का संकल्प लिया। बैठक में प्रदर्शित जागरूकता बैनर के माध्यम से लोगों को संदेश दिया गया कि नशा छोड़ें-जीवन जोड़ें। उपस्थित लोगों को बताया गया कि नशा मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान पहुंचाता है, परिवार में कलह और सामाजिक बदनामी का कारण बनता है, धन की बर्बादी के साथ आर्थिक नुकसान बढ़ाता है, अपराध की ओर धकेलता है और असमय मृत्यु का खतरा भी पैदा करता है। बैठक में इस बात पर विशेष जोर दिया गया कि नशा विनाश की जड़ है जबकि जीवन अनमोल है। सभी मेडिकल संचालकों ने शपथ लेते हुए कहा कि वे नशे के दुष्प्रभावों के प्रति आमजन को जागरूक करेंगे, समाज को नशा मुक्त बनाने में सक्रिय सहयोग देंगे तथा स्वस्थ, सुरक्षित और समृद्ध चोपन एवं सोनभद्र के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।बैठक के दौरान लोगों से अपील की गई कि नशे से दूर रहकर शिक्षा, व्यायाम, परिवार, लक्ष्य और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को प्राथमिकता दें। साथ ही जरूरतमंद लोगों को नशा मुक्ति के लिए उचित परामर्श और सहायता उपलब्ध कराने पर भी विस्तृत चर्चा की गई। उपस्थित सभी मेडिकल संचालकों ने अभियान को जन-जन तक पहुंचाने और इसे व्यापक जनभागीदारी के साथ सफल बनाने का संकल्प व्यक्त किया।

जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने चोपन थाना दिवस में सुनीं जनशिकायतें, गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के दिए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
सोनभद्र। जिलाधिकारी श्री चर्चित गौड़ एवं पुलिस अधीक्षक श्री अभिषेक वर्मा ने शनिवार को चोपन थाना परिसर में आयोजित थाना दिवस में पहुंचकर फरियादियों की जनसमस्याओं एवं शिकायतों को गंभीरता से सुना। इस दौरान प्राप्त शिकायतों के त्वरित एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने उपस्थित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि राजस्व एवं पुलिस विभाग की संयुक्त टीम मौके पर जाकर शिकायतों का निष्पक्ष, समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित करे, ताकि आमजन को अनावश्यक परेशानी का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि जनता की समस्याओं का समाधान शासन की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है और इसमें किसी प्रकार की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। इस अवसर पर उप जिलाधिकारी ओबरा श्री विवेक कुमार सिंह सहित राजस्व एवं पुलिस विभाग के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

डिशवॉशिंग लिक्विड में खतरनाक रसायन हो सकते हैं-केमिकल फ्री प्रोडक्ट लें, बरतें 11 सावधानियां

नयी दिल्ली। बर्तन धोने के लिए ज्यादातर लोग डिशवॉशिंग

लिक्विड या सोप इस्तेमाल करते हैं। इसके बाद हमें ये तसल्ली हो जाती है कि बर्तन साफ और सुरक्षित हैं। लेकिन क्या आपने कभी ये सोचा है कि साफ व चमकते हुए बर्तन भी हमारी सेहत को नुकसान पहुंचा सकते हैं। दरअसल कुछ डिशवॉशिंग लिक्विड के केमिकल अवशेष बर्तनों पर रह सकते हैं। ये केमिकल्स खाने के साथ शरीर में जा सकते हैं। इस बारे में फरवरी, 2023 में 'द जर्नल ऑफ एलर्जी एंड क्लिनिकल इम्यूनोलॉजी' में एक स्टडी पब्लिश हुई। इसके मुताबिक, डिशवॉशर में इस्तेमाल होने वाले रिंस एजेंट्स के अवशेष आंतों की प्रोटेक्टिव लेयर को डैमेज कर सकते हैं। कुछ केमिकल हॉर्मोनल असंतुलन और एलर्जी की वजह बन सकते हैं। इसलिए आज हम डिशवॉशिंग लिक्विड के इस्तेमाल से होने वाले नुकसान की बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि-डिशवॉशिंग लिक्विड में कौन-से केमिकल्स होते हैं? इसके क्या साइड इफेक्ट्स हो सकते हैं? बर्तन साफ करने का

सुरक्षित तरीका क्या है? एक्सपर्ट डॉ. अरविंद अग्रवाल, डायरेक्टर, इंटरनल मेडिसिन, श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट, दिल्ली जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से- सवाल- डिशवॉशिंग लिक्विड क्या है और यह कैसे काम करता है? जवाब- यह एक क्लीनिंग प्रोडक्ट है, जिससे बर्तन साफ किए जाते हैं। इससे बर्तनों में चिपका तेल और गंदगी आसानी से हट जाते हैं। इसमें मौजूद सर्फैक्टेंट तेल और गंदगी को छोटे कणों में तोड़ देते हैं, जो पानी के साथ बह जाते हैं। कुछ लिक्विड और सोप में एंजाइम व हार्ड अल्कलाइन्स भी होते हैं, जो जिद्दी दाग और जमी चिकनाई को साफ करते हैं। सवाल- डिशवॉशिंग लिक्विड में कौन से केमिकल्स हो सकते हैं?

जवाब- इनमें सर्फेक्टेंट्स, फ्रेगरेंस, प्रिजर्वेटिव्स, डाई और एंटीबैक्टीरियल एजेंट्स हो सकते हैं। इसके अलावा कुछ अन्य केमिकल्स इनडायरेक्टली मौजूद हो सकते हैं। ये ब्रांड्स के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं। नीचे दिए ग्राफिक में डिशवॉशिंग लिक्विड में यूज होने वाले संभावित केमिकल्स की लिस्ट देखिए-सर्फेक्टेंट (एसएलएस,एसएलईसी) चिकनाई हटाने के लिए। फॉस्फेट्स बेहतर सफाई के लिए। अल्कोहल एथॉक्सिलेट्स गंदगी हटाने के लिए। सिंथेटिक फ्रेगरेंस खुशबू के लिए। थैलेट्स खुशबू रोकने के लिए। ट्राइक्लोसन एंटीबैक्टीरियल एजेंट।

सवाल- क्या बर्तन धोने के बाद भी डिशवॉशिंग सोप के बारीक पार्टिकल्स बर्तन में छूटे रह सकते हैं? जवाब- हां, ज्यादा लिक्विड इस्तेमाल करने या बर्तनों को ठीक से रिंस न करने पर सूक्ष्म केमिकल अवशेष रह सकते हैं। ये दिखाई नहीं देते, लेकिन खाने के जरिए शरीर में जा सकते हैं। सवाल- डिशवॉशिंग सोप के ये छोटे पार्टिकल्स हमारी सेहत को कैसे नुकसान पहुंचा सकते हैं? जवाब- ये सूक्ष्म कण खाने के साथ शरीर में जा सकते हैं। इससे कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। सवाल- डिशवॉशिंग लिक्विड में आर्टिफिशियल फ्रेगरेंस होती है। क्या इसे इनहेल करना भी नुकसानदायक हो सकता है? जवाब- हां, इससे कुछ लोगों में नाक-गले में जलन, छींक, सिरदर्द, एलर्जी और सांस संबंधी दिक्कत हो सकती है। अस्थमा के लक्षण भी बढ़ सकते हैं। सवाल- डिशवॉशिंग लिक्विड के केमिकल्स और आर्टिफिशियल फ्रेगरेंस किन लोगों के लिए ज्यादा खतरनाक हो सकते हैं? जवाब- इसके फ्रेगरेंस कुछ लोगों के लिए ज्यादा नुकसानदायक हो सकते हैं। जैसेकि- जिन्हें अस्थमा या सांस की एलर्जी है।

जिनकी स्किन सेंसिटिव है। जिन्हें स्किन संबंधी समस्या है। जिन्हें हॉर्मोनल प्रॉब्लम है। छोटे बच्चे और बुजुर्ग। गर्भवती महिलाएं। पालतू जानवर। सवाल- क्या सभी डिशवॉशिंग लिक्विड में हानिकारक केमिकल्स होते हैं या कुछ सुरक्षित विकल्प भी उपलब्ध हैं? जवाब- सभी डिशवॉशिंग लिक्विड में एक जैसे केमिकल्स नहीं होते। कुछ प्रोडक्ट्स कम केमिकल वाले होते हैं और कुछ घरेलू या डीआईवाई विकल्प भी उपलब्ध हैं। हमेशा लेबल पढ़कर ह्यूमन-सेफ इंग्रीडिएंट वाले प्रोडक्ट चुनें। सवाल- क्या डिशवॉशर में बर्तन धुलने पर भी केमिकल इनहेलिंग का रिस्क होता है? जवाब- हां, डिशवॉशर की भाप के साथ कुछ केमिकल हवा में मिल सकते हैं। मशीन खोलते समय यह भाप सांस के जरिए अंदर जा सकती है, जिससे कुछ लोगों में जलन या सांस की परेशानी हो सकती है।

सवाल- बर्तन धोने का सुरक्षित तरीका क्या है? जवाब- इसके लिए कुछ बातों का खास ख्याल रखें- कम मात्रा में डिशवॉशिंग लिक्विड इस्तेमाल करें। बर्तनों को बहते साफ पानी में अच्छी तरह रिंस करें। तेज खुशबू और ज्यादा केमिकल वाले प्रोडक्ट से बचें। फ्रेगरेंस-फ्री या कम केमिकल वाला विकल्प चुनें। बर्तन धोते समय दस्ताने पहनें और किचन में वेंटिलेशन रखें। बर्तन धुलने के बाद हाथों को अच्छी तरह साफ पानी से धोएं। डिशवॉशर इस्तेमाल करते समय सही मात्रा और सही मोड का चयन करें।

सवाल- डिशवॉशिंग लिक्विड चुनते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? जवाब- मार्किट से डिशवॉशिंग लिक्विड खरीदते समय कुछ बातों का खास ख्याल रखें। जैसेकि- ऐसे प्रोडक्ट चुनें, जिनमें फॉस्फेट, एसएलएस,एसएलईसी, थैलेट्स और सिंथेटिक फ्रेगरेंस न हों। भरोसेमंद ब्रांड और क्लीयर इंग्रीडिएंट लिस्ट वाले प्रोडक्ट लें। बहुत ज्यादा झाग बनाने वाले लिक्विड से बचें। संभव हो तो ऑर्गेनिक या प्लांट बेस्ड लिक्विड लें। खरीदने से पहले लेबल ध्यान से पढ़ें।

क्या आपके भोजन में एंटीबायोटिक है? ये लिवर, किडनी डैमेज कर सकता है,कैसे चुनें सुरक्षित भोजन

जयपुर। क्या आपने कभी सोचा है कि आप जो खाना खा रहे हैं, उसमें एंटीबायोटिक भी हो सकता है? सुनकर हैरानी हो सकती है, लेकिन ये सच है। मीट, दूध, अंडे और यहां तक कि फल-सब्जियों के जरिए भी एंटीबायोटिक हमारे शरीर तक पहुंच सकता है। दरअसल, पशुपालन और फूड प्रोडक्शन के दौरान इस्तेमाल होने वाली दवाएं कई बार भोजन में अवशेष के रूप में रह जाती हैं। ये मात्रा भले ही बहुत कम हो, लेकिन लंबे समय तक इसे खाने से सेहत बिगड़ सकती है। दुनिया भर में एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस को लेकर जो चिंता जताई जा रही है, उसमें एक बड़ा कारण सीधे फूड के जरिए हमारी थाली तक पहुंच रहे एंटीबायोटिक्स भी हैं। पाचन और इम्यून सिस्टम कमजोर होने से लेकर गंभीर बीमारी तक, इसके कई खतरनाक नतीजे हो सकते हैं। इसलिए 'जरूरत की खबर' में आज फूड में शामिल एंटीबायोटिक की बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- एंटीबायोटिक खाने में कैसे आते हैं? कौन से फूड आइटम्स ज्यादा रिस्की हैं? अपने लिए सुरक्षित भोजन कैसे चुनें? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. रोहित शर्मा, कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसिन, अपोलो स्पेक्ट्रा हॉस्पिटल, जयपुर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- क्या सच में हमारे भोजन में एंटीबायोटिक मौजूद होते हैं? जवाब- हां, ये सच है। ऐसा हमेशा 100 फीसदी मामलों में नहीं होता, लेकिन काफी बड़े पैमाने पर होता भी है। आमतौर पर एनिमल प्रोडक्ट्स जैसे मीट, अंडा और दूध के जरिए एंटीबायोटिक हमारी थाली तक पहुंचता है। सवाल- एंटीबायोटिक खाने में आते कैसे हैं? जवाब- इसे पॉइंटर्स में विस्तार से समझिए- पशुओं को दवा देना मुर्गी, गाय, भैंस, मछली आदि को इलाज के दौरान एंटीबायोटिक दिए जाते हैं। कभी-कभी प्रोडक्शन बढ़ाने के लिए भी इनका उपयोग किया जाता है। विथड्रॉल पीरियड फॉलो न करना जानवरों को दवा देने के बाद कुछ समय तक उनके दूध या मांस का उपयोग करना मना होता है। अगर यह नियम फॉलो न किया जाए तो दवा के अवशेष भोजन में आ सकते हैं। मछलियों को एंटीबायोटिक देनाः-तालाब या फार्म में मछलियों को बीमारियों से बचाने के लिए पानी में एंटीबायोटिक मिलाए जाते हैं, जो मछलियों के शरीर में जमा हो सकते हैं। गलत डोज देनाः- अगर एंटीबायोटिक जरूरत से ज्यादा या डॉक्टर के कंसल्टेशन के बिना दी जाए तो उनके अवशेष रहने का रिस्क बढ़ जाता है। खेती में कीटनाशकों का इस्तेमालः- फार्मिंग के दौरान अगर सही मात्रा से ज्यादा कीटनाशक यूज किए जाएं तो उनके अवशेष भी फल-सब्जियों में बचे रह जाते हैं। सवाल- किन फूड आइटम्स में एंटीबायोटिक होने की संभावना ज्यादा होती है? जवाब- जो फूड सीधे पशुपालन या एक्वाकल्चर (मछली और अन्य जलीय जीवों का पालन) से आते हैं, उनमें एंटीबायोटिक के अवशेष होने का रिस्क ज्यादा होता है। इन फूड्स में हो सकता है एंटीबायोटिकः- दूध, दही, पनीर, अंडे, चिकन, मटन, बीफ, मछली, सी-फूड, सॉसेज, नगेट्स। सवाल- क्या पौधों/सब्जियों में भी एंटीबायोटिक हो सकते हैं?जवाब- हां, खेती में भी कीटनाशककों का इस्तेमाल होता है। मानक लिमिट से ज्यादा यूज करने पर इसके अंश हमारे भोजन तक पहुंच सकते हैं। पौधों पर दवा का छिड़कावः-फसलों को कीड़ों, फंगस आदि से बचाने के लिए कीटनाशकों का का इस्तेमाल किया जाता है। एनवायर्नमेंटल पॉल्यूशनः- इंडस्ट्रियल वेस्ट या दवाइयों के गलत तरीके से निस्तारण से भी

मिट्टी और पानी प्रभावित हो सकते हैं। जैविक खादः-अगर पशुओं को एंटीबायोटिक दिए गए हों तो उनके गोबर से बनी खाद में दवा के अंश हो सकते हैं। इससे एंटीबायोटिक पौधों तक जा सकता है। दूषित पानी से सिंचाईः-अगर सिंचाई में ऐसा पानी इस्तेमाल हो, जिसमें एंटीबायोटिक हों तो मिट्टी के जरिए पौधों तक पहुंच सकता है। सवाल- भोजन के जरिए शरीर में जाने वाले ये एंटीबायोटिक कितने खतरनाक हैं? जवाब- ये एंटीबायोटिक आमतौर पर बहुत कम मात्रा में होते हैं। इसलिए ये तुरंत कोई नुकसान नहीं करते। हालांकि, इन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। इससे लंबे समय में गंभीर नुकसान हो सकते हैं। एलर्जिक रिएक्शंस, हाइपरसेंसिटिविटी, एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस, डाइजेस्टिव सिस्टम पर असर हॉर्मोनल इंबैलेंस मेटाबॉलिक प्रॉब्लम्स टॉक्सिसिटी लिवर, किडनी पर दबाव। भोजन के जरिए शरीर में जाने वाले एंटीबायोटिक अवशेष से कई तरह की हेल्थ प्रॉब्लम्स हो सकती हैं। डाइजेशन- डायरिया, कब्ज पेट दर्द, गैस, ब्लोटिंग इन्फेक्शन बार-बार इन्फेक्शन होना। मामूली संक्रमण गंभीर होना। सर्दी-जुकाम देर तक रहना। इरिटेबल बाउल सिंड्रोम, गट माइक्रोबायोम इंबैलेंस, एलर्जी, स्किन रैश, खुजली, गंभीर एलर्जी, हॉर्मोनल प्रॉब्लम्स, हॉर्मोनल इंबैलेंस बच्चों की ग्रोथ रुकना, जल्दी या देर से प्युबर्टी, मेंट प्रॉब्लम्स, मूड स्विंग्स, एंजाइटी डिप्रेशन, मेटाबॉलिक समस्याएं ओबिसिटी स्लो मेटाबॉलिज इंसुलिन रेजिस्टेंस, ऑर्गन्स पर असर, लिवर टॉक्सिसिटी किडनी डैमेज।

सवाल- क्या इसका सीधे साइड इफेक्ट होता है या लंबे समय में असर दिखता है? जवाब- ये एंटीबायोटिक की मात्रा पर निर्भर करता है। अगर भोजन में एंटीबायोटिक की मात्रा ज्यादा है तो तुरंत साइड इफेक्ट दिख सकते हैं। अगर एंटीबायोटिक की मात्रा कम है तो लंबे समय में इसके नुकसान सामने आ सकते हैं। सवाल- क्या इससे 'एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस' भी बढ़ सकता है? जवाब- हां, इसका सबसे बड़ा रिस्क एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस ही है। अगर भोजन के जरिए बार-बार एंटीबायोटिक शरीर में जा रहे हैं तो शरीर में मौजूद बैक्टीरिया उन दवाओं के आदी हो जाते हैं। धीरे-धीरे ये बैक्टीरिया खुद को इस तरह बदल लेते हैं कि दवाएं उन पर असर करना बंद कर देती हैं। सवाल- भारत में कौन-सी एजेंसियां फूड में एंटीबायोटिक कंट्रोल करती हैं? जवाब- इसके लिए भारत में कई एजेंसियां मिलकर काम करती हैं- 1. फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एफएसएसएआई) यह भारत में फूड्स से जुड़े सभी मानक तय करती है। 2. स्टेट फूड सेफ्टी अथॉरिटीजः-दुकानों, डेयरी, मीट शॉप आदि की जांच करती हैं।सैंपल लेकर लैब में टेस्ट करती हैं। 3. सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशनः- दवाओं की मंजूरी, क्लिनिकल ट्रायल्स और क्वालिटी तय करती हैं। 4. डिपार्टमेंट ऑफ एनिमल हसबेंडरी एंड डेयरिंगः- डेयरी, पोल्ट्री, एनिमल हेल्थ से जुड़े नियम बनाता है। पशुओं में दवाओं के सही उपयोग के दिशा-निर्देश देता है। सवाल- एफएसएसएआई ने एंटीबायोटिक की क्या लिमिट तय की है? जवाब- एफएसएसएआई के अनुसार, एंटीबायोटिक की सीमा दवा, फूड्स और उपयोग पर निर्भर करती है। सामान्य एंटीबायोटिक्स के लिए सीमा लगभग 0.01एमजी/केजी होती है। खतरनाक एंटीबायोटिक्स जैसे क्लोरोफेनिकोल के लिए यह बहुत कम (लगभग 0.0003 एमजी/केजी) होती है। कुछ मामलों में 0.001 एमजी/केजी या उससे कम लिमिट होती है। सवाल- कैसे पता चलता है कि खाने में एंटीबायोटिक है? जवाब- इसे देखकर, स्वाद या स्मेल से पता नहीं लगाया जा सकता है। इसके लिए लैब टेस्ट जरूरी है। 'फूड सेफ्टी स्टैंडर्ड अथॉरिटी ऑफ इंडिया' के अनुसार 'माइक्रोबियल इनहिबिशन टेस्ट, थ्र्र्र्री और थ्र-श्ए/श्ए' जैसे टेस्ट से एंटीबायोटिक की मौजूदगी और मात्रा का पता चलता है। दूध के लिए कुछ रैपिड टेस्ट किट भी उपलब्ध हैं, लेकिन सबसे सटीक रिजल्ट लैब टेस्ट से ही मिलते हैं। सवाल- क्या आम उपभोक्ता खुद इसे पहचान सकते हैं? जवाब- नहीं, आम उपभोक्ता खुद से फूड्स में एंटीबायोटिक की मात्रा नहीं पता कर सकते, क्योंकि रंग, स्वाद और गंध से इसका पता नहीं चलता है। उपभोक्ता केवल विश्वसनीय ब्रांड, एफएसएसएआई लाइसेंस वाले प्रोडक्ट खरीदकर इसके रिस्क को कम कर सकते हैं। सवाल- हम एंटीबायोटिक्स से कैसे बच सकते हैं? जवाब- इसके लिए इन 8 बातों का ध्यान रखें- 'फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया' लाइसेंस वाले प्रोडक्ट ही खरीदें।दूध, मीट और अंडे भरोसेमंद ब्रांड से ही लें। बहुत सस्ते या संदिग्ध सोर्स से फूड्स न लें। भोजन को अच्छी तरह पकाकर खाएं। कच्चे और पके भोजन को अलग रखें। रसोई और हाथों की साफ-सफाई बनाए रखें। ऑर्गेनिक या सर्टिफाइड प्रोडक्ट्स को प्राथमिकता दें। स्थानीय विश्वसनीय दुकानदार या सप्लायर से ही खरीदारी करें। सवाल- क्या ऑर्गेनिक फूड्स पूरी तरह सुरक्षित हैं? जवाब- नहीं, इसे पूरी तरह सुरक्षित नहीं कहा जा सकता है, लेकिन ये कुछ हद तक बेहतर होते हैं। क्यों पूरी तरह सुरक्षित नहीं? ऑर्गेनिक में भी कीटनाशक उपयोग होते हैं। मिट्टी, पानी या हैंडलिंग से बैक्टीरिया/संक्रमण आ सकता है। गलत स्टोरेज या गंदगी से रिस्क बढ़ सकता है। फिर भी बेहतर क्यों माना जाता है? सिंथेटिक केमिकल और एंटीबायोटिक का उपयोग कम

होता है। फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया जैसे नियमों के तहत सर्टिफाइड होता है। सवाल- क्या खाने को पकाने से एंटीबायोटिक खत्म हो जाते हैं? जवाब- नहीं, खाने को पकाने से एंटीबायोटिक पूरी तरह खत्म नहीं होते। कई एंटीबायोटिक हीट-स्टेबल होते हैं यानी गर्मी सहन कर लेते हैं। उबालने या पकाने से उनकी मात्रा थोड़ी कम हो सकती है, पर पूरी तरह नहीं खत्म होती है। इसलिए फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया के मानकों वाले फूड्स ही लें। सवाल- डॉक्टर्स इस बारे में क्या कहते हैं? जवाब- डॉ. रोहित शर्मा के मुताबिक, खाने में एंटीबायोटिक अवशेष एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या बन सकते हैं।भोजन के जरिए शरीर में बार-बार एंटीबायोटिक जाने से शरीर में एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस बढ़ सकता है, जिससे दवाएं बेअसर हो सकती हैं। इसके कारण सामान्य संक्रमण भी गंभीर हो सकता है। इसलिए हमेशा सुरक्षित भोजन करें। सवाल- न्यूट्रिशनिस्ट और फूड साइंटिस्ट इस बारे में क्या कहते हैं? जवाब- खाने में एंटीबायोटिक अवशेष लॉन्ग टर्म में हेल्थ प्रॉब्लम्स बढ़ा सकते हैं। यह गट माइक्रोबायोम को प्रभावित कर सकते हैं। लगातार एक्सपोजर से एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस बढ़ सकता है। इम्यूनिटी और पाचन पर नकारात्मक असर पड़ सकता है। बच्चों और बुजुर्गों पर ज्यादा प्रभाव होता है।

सूझबूझ इसी में कि हम पड़ोसियों के साझेदार बनें

एक प्रमुख शक्ति के रूप में भारत का उदय स्थिर और सहयोगी पड़ोस की अपेक्षा करता है। कोई भी देश अपने आस-पड़ोस के स्ट्रैटेजिक परिवेश का प्रबंधन किए बिना दुनिया में दबदबे का दावा नहीं कर सकता। 1985 में सार्क की स्थापना के पीछे यही तर्क था। किंतु 2016 में पाकिस्तान-प्रायोजित आतंकवाद के कारण इस्लामाबाद में प्रस्तावित 19वें शिखर सम्मेलन के रद्द होने के बाद से यह संगठन

निष्प्राण-सा हो गया है। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जब देशों ने अपनी आपसी प्रतिद्वंद्विताओं को पीछे छोड़कर क्षेत्रीय सहयोग की संस्थाओं का निर्माण किया। ऐसी संस्थाएं इसलिए अस्तित्व में आईं, क्योंकि नेताओं ने यह समझ लिया था कि भूगोल एक स्थायी हकीकत है, जबकि संघर्ष महज एक विकल्प है। चुनौती यह थी कि भौगोलिक निकटता को तनाव के स्रोत से बदलकर सामूहिक तरक्की के साधन में बदला जाए। इसका सबसे उल्लेखनीय उदाहरण ईयू है। ब्रिटेन और फ्रांस सदियों तक प्रतिद्वंद्वी रहे। जर्मनी ने इन दोनों के विरुद्ध विनाशकारी युद्ध लड़े। यूरोप राष्ट्रीय पहचानों की रक्षा को लेकर अत्यधिक संवेदनशील था। फिर भी, विश्वयुद्धों की त्रासदी के बाद यूरोप ने धीरे-धीरे महसूस किया कि समृद्धि और सुरक्षा का मार्ग टकराव नहीं, बल्कि सहयोग से होकर जाता है। परिणामस्वरूप एक ऐसी प्रक्रिया आरंभ हुई, जो अंततः ईयू के रूप में विकसित हुई। यह आधुनिक इतिहास में क्षेत्रीय एकीकरण के सबसे सफल उदाहरणों में से एक है।अफ्रीकी संघ का उदय भी उन सीमाओं के बावजूद हुआ था, जिन्हें औपनिवेशिक शक्तियों ने मनमाने ढंग से निर्धारित किया था। वहां जातीय संघर्ष तथा अंतर-राज्यीय विवाद भी थे। आसियान भी ऐसे देशों को एक मंच पर लाया, जो पहले पारस्परिक अविश्वास और संघर्ष के अनुभव से गुजर चुके थे। इंडोनेशिया और मलेशिया 1960 के दशक में कोनफ्रोंतासी संघर्ष में उलझे थे। 1965 में मलेशिया से सिंगापुर का अलगाव कटु परिस्थितियों में हुआ था। थाईलैंड और कंबोडिया के बीच लंबे समय से सीमा-विवाद थे। फिर भी, आसियान एक अत्यंत प्रभावी क्षेत्रीय मंच के रूप में विकसित हुआ, क्योंकि उसके सदस्य देशों ने यह समझ लिया था कि आर्थिक विकास और सामरिक स्थिरता का सर्वोत्तम मार्ग सामूहिक प्रयासों से होकर जाता है। इसी प्रकार, अमेरिकी राष्ट्रों का संगठन (ओएएस) भी उन देशों के बीच स्थापित हुआ, जिनका इतिहास क्षेत्रीय विवादों, वैचारिक विभाजनों और राजनीतिक अस्थिरता से भरा हुआ था। इन सभी उदाहरणों में एक महत्वपूर्ण तत्व साझा सांस्कृतिक और सभ्यतागत संबंधों का अस्तित्व था। यही तर्क दक्षिण एशिया पर भी समान रूप से लागू होता है। राजनीतिक मतभेदों के बावजूद दक्षिण एशिया में गहन सभ्यतागत एकता विद्यमान रही है। इस क्षेत्र के लोग इतिहास, भाषा, धर्म, भोजन, संस्कृति, साहित्य, संगीत और पारिवारिक-सामाजिक संबंधों के ऐसे नेटवर्कों से जुड़े हैं, जिनका अस्तित्व आधुनिक राष्ट्र-राज्यों के उदय से बहुत पहले से रहा है। लेकिन अफसोस कि सार्क की प्रगति भारत और पाकिस्तान के तनावपूर्ण संबंधों की बंधक बनकर रह गई। दशकों से चले आ रहे अविश्वास ने सामूहिक पहलों को पंगु बना दिया। चीन ने भी क्षेत्रीय विभाजनों का लाभ उठाकर अपने सामरिक हितों को आगे बढ़ाने के अवसर देखे। इसके बावजूद सार्क के पीछे निहित तर्क आज भी उतना ही प्रासंगिक है। दक्षिण एशिया के साथ भारत का संबंध केवल भौगोलिक ही नहीं, सभ्यतागत भी है। बौद्ध धर्म के माध्यम से भारत और श्रीलंका के संबंध गहरे हैं। नेपाल के भारत के साथ सांस्कृतिक और धार्मिक संबंध स्थायी हैं। बांग्लादेश भारत के साथ गहरे भाषाई, ऐतिहासिक और भावनात्मक संबंध साझा करता है। यहां तक कि पाकिस्तान के साथ भी हमारा साझा इतिहास, संस्कृति, भाषा, साहित्य और संगीत की सदियों पुरानी विरासत मानवीय संबंधों का एक सशक्त आधार प्रदान करती है। समाधान सार्क को त्यागने में नहीं, बल्कि धैर्य और व्यावहारिकता के साथ उसे पुनर्जीवित करने में है। विश्वास रातों-रात निर्मित नहीं किया जा सकता। किंतु जब लोग व्यापार, पर्यटन, शैक्षिक आदान-प्रदान, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, परस्पर संपर्क, ऊर्जा सहयोग आदि के माध्यम से सहयोग के लाभों का प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं, तब वे स्वयं उस सहयोग के पैरोकार भी बन जाते हैं। एक उभरती हुई प्रमुख शक्ति के रूप में भारत के लिए पहली प्राथमिकता अपने निकटवर्ती पड़ोस को मजबूत बनाना होना चाहिए। दक्षिण एशिया के भूगोल ने हमें पड़ोसी बनाया है। लेकिन सूझबूझ इसी में है कि हम सहयोगी भी बनें। भूगोल एक स्थायी हकीकत है, जबकि संघर्ष महज एक विकल्प है। ऐसे में चुनौती यह है कि भौगोलिक निकटता को तनाव के स्रोत से बदलकर सामूहिक तरक्की के साधन में बदला जाए। इतिहास भी यही सबक सिखाता है। (ये लेखक के अपने विचार हैं,पवन के. वर्मा)

स्त्री की सुगंध!

स्त्री...जब भगवान ने स्त्री की रचना की, तो उस शुक्रवार को वे देर रात तक काम करते रहे...तब एक देवदूत ने पूछा, 'इतना समय क्यों लग रहा है?' भगवान बोले, 'उसे गढ़ने के लिए मुझे कितनी सारी शर्तें पूरी करनी पड़ती हैं, देखा है तुमने?' उसे हर परिस्थिति में काम करना आना चाहिए। वो एक साथ कई बच्चों की देखभाल कर सके। उसकी एक झप्पी घुटने के घाव से लेकर टूटे हुए दिल तक – सब ठीक कर दे। और ये सब उसे केवल दो हाथों से करना है। बीमार होने पर भी वो स्वयं को संभालती है और दिन में 18 घंटे काम कर सकती है। देवदूत हैरान हो गया, 'केवल दो हाथ? नामुमकिन!' 'और ये तो आम डिज़ाइन है?' देवदूत स्त्री के पास गया और उसे छूकर बोला, 'प्रभु, आपने इसे बहुत ही कोमल बनाया है।' भगवान ने कहा, 'वो कोमल है, पर मैंने उसे बहुत मज़बूत बनाया है। वो कितना सह सकती है और कितनी मुश्किलों को पार कर सकती है, तुम सोच भी नहीं सकते।' देवदूत ने पूछा, 'क्या ये सोच सकती है?' भगवान बोले, 'ये केवल सोचती ही नहीं, तर्क लगाती है, निर्णय लेती है और

बातचीत भी करती है।' देवदूत ने उसके गाल को छुआ...'प्रभु, यहाँ से कुछ टपक रहा है! आपने इस पर बहुत बोझ डाल दिया है।' भगवान बोले, 'वो टपक नहीं रहा... वो आँसू हैं।' 'वो किसलिए?' देवदूत ने पूछा। भगवान ने कहा, 'आँसू उसके दुःख, शंका, प्रेम, अकेलापन, दर्द और गर्व जताने का तरीका हैं।' ये सुनकर देवदूत बहुत प्रभावित हुआ। 'प्रभु, आप सचमुच अद्भुत हैं। आपने हर चीज़ का ख्याल रखा है। वो सच में एक विलक्षण स्त्री है।' भगवान बोले, 'हाँ, वो है। उसमें पुरुष को चकित कर देने की ताकत है। वो संकटों का सामना कर सकती है और भारी ज़िम्मेदारियाँ उठा सकती है। उसके पास खुशी, प्रेम और अपनी राय होती है। चिल्लाने का मन होने पर भी वो मुस्कुराती है। रोने का मन होने पर भी वो गाती है, खुशी में रोती है और डर लगने पर भी हँसती है। जिस बात पर उसे यकीन है, उसके लिए लड़ती है। उसका प्रेम निःस्वार्थ होता है रिश्तेदार या मित्र के जाने पर उसका दिल टूटता है, पर फिर भी वो जीने की ताकत ढूंढ लेती है।' देवदूत ने पूछा, 'तो क्या वो परिपूर्ण है?' भगवान बोले, 'नहीं... उसमें केवल एक कमी है – वो अक्सर अपनी कीमत भूल जाती है।' स्त्री होना अनमोल है।

हैकिंग को रूटीन बना देना एआई की 'बुद्धिमत्ता' नहीं कहला सकती

एआई कम्पनी एंथ्रोपिक ने हाल ही में अपने लार्ज लैंग्वेज मॉडल की नवीनतम सेवा क्लॉड माइथोस प्रिव्यू को जारी किया,

लेकिन यह केवल 40 बड़ी टेक-कंपनियों के सीमित समूह के लिए होगा। यह नया मॉडल परफॉर्मेंस में बुनियादी बदलावों का दावा करता है, जिसके साइबर और राष्ट्रीय सुरक्षा पर गहरे प्रभाव हो सकते हैं। क्लॉड माइथोस के डेवलपमेंट के दौरान एंथ्रोपिक ने पाया कि यह न केवल किसी भी मॉडल की तुलना में अधिक जटिलता और आसानी से सॉफ्टवेयर कोड लिख सकता है, बल्कि अपनी इस क्षमता के चलते यह दुनिया के लगभग सभी प्रमुख सॉफ्टवेयर सिस्टमों में व्याप्त कमजोरियों को भी पहले की तुलना में अधिक आसानी से खोज सकता है। लेकिन अगर यह टूल गलत हाथों में चला गया, तो वे दुनिया के लगभग हर प्रमुख सॉफ्टवेयर सिस्टम- यहां तक कि इस समूह में शामिल कंपनियों द्वारा बनाए सिस्टमों को भी हैक कर सकते हैं। यह कोई पब्लिसिटी-स्टंट नहीं है। इस घोषणा से पहले, प्रमुख टेक-कंपनियों के प्रतिनिधि ट्रम्प प्रशासन के साथ निजी तौर पर इस बात पर चर्चा कर रहे थे कि इसका उन देशों की सुरक्षा पर क्या प्रभाव पड़ेगा, जो इन असुरक्षित सॉफ्टवेयर प्रणालियों का उपयोग करते हैं। एंथ्रोपिक ने अपने एक लिखित बयान में कहा कि पिछले केवल एक महीने में ही माइथोस प्रिव्यू ने हजारों गंभीर कमजोरियों की पहचान की है। ये हर प्रमुख ऑपरेटिंग सिस्टम और वेब ब्राउजर में शामिल हैं। एआई जिस तेजी से बढ़ रहा है, उसके मद्देनजर ऐसी क्षमताओं का व्यापक होना अब दूर नहीं है। और संभव है कि वे उन पक्षों से भी आगे फैल जाएं, जो इन्हें सुरक्षित रूप से उपयोग करने की बात करते हैं।सुपर-इंटेलिजेंट एआई अपेक्षा से कहीं तेजी से सामने आ रहा है। यह तो पहले से स्पष्ट था कि एआई किसी भी व्यक्ति- चाहे उसकी कम्प्यूटर साक्षरता का स्तर कुछ भी हो- को सॉफ्टवेयर कोड लिखने में असाधारण रूप से सक्षम बना रहा है। लेकिन बताया जाता है कि स्वयं एंथ्रोपिक ने भी यह अनुमान नहीं लगाया था कि यह इतनी जल्दी, इतनी दक्षता के साथ, मौजूदा कोड में खामियों को खोजने और उनका दोहन करने के तरीकों को पहचानने में सक्षम हो जाएगा। क्लॉड माइथोस ने हर प्रमुख ऑपरेटिंग सिस्टम और वेब ब्राउजर में गंभीर कमजोरियों की पहचान की है- ये ऐसे सिस्टम हैं, जिन पर दुनिया भर में बिजली ग्रिड, जल आपूर्ति तंत्र, एयरलाइन आरक्षण प्रणालियां, रीटेलिंग नेटवर्क, सैन्य प्रणालियां और अस्पताल निर्भर हैं। यदि यह टूल व्यापक रूप से उपलब्ध हो जाता है, तो इसका अर्थ होगा कि किसी भी प्रमुख बुनियादी ढांचे की प्रणाली को हैक करने की क्षमता- जो पहले केवल निजी क्षेत्र के विशेषज्ञों और खुफिया एजेंसियों तक सीमित ?थी और जो एक कठिन और महंगा कार्य था- अब हर आपराधिक तत्व, आतंकी संगठन, देश के लिए सुलभ हो सकती है। इस समस्या का समाधान दुनिया का कोई भी देश अकेले नहीं कर सकता। शुरुआत दो एआई महाशक्तियों- अमेरिका और चीन को करनी होगी। यह बहुत जरूरी हो गया है कि वे आपस में सहयोग करना सीखें, ताकि बुरी ताकतें इस साइबर क्षमता तक पहुंच न बना सकें। यह उतना ही बुनियादी महत्व का है, जितना एटमी हथियारों के बाद परमाणु अप्रसार संधियां थीं। जटिल साइबर हैकिंग अभियानों को विकसित करने की जो क्षमता पहले बड़े देशों, सेनाओं, कंपनियों और बड़े बजट वाले आपराधिक संगठनों तक सीमित थी, वह अब छोटे समूहों को भी उपलब्ध हो सकती है। ऐसे में यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि वे केवल जिम्मेदार हाथों तक ही सीमित रहें। (द न्यूयॉर्क टाइम्स से,थॉमस एल. फ्रीडमैन)

कला को पनपना है तो अमीरों को सहायता और शिक्षितों को प्रोत्साहन देना चाहिए

आईपीएल पूरा होने की वजह से लंबे समय बाद किसी रविवार की शाम मुझे लगा कि मेरे पास करने के लिए कुछ नहीं था। परिवार ने एकाएक तय किया

कि मुंबई के बांद्रा स्थित नीता मुकेश अंबानी कल्चरल सेंटर (एनएमएसीसी) चलें। वहां हम पारंपरिक भरतनाट्यम नृत्य शो 'इकोज ऑफ तंजावुर- द अनब्रोकन' देखने पहुंचे। 125 सीटों वाले छोटे किन्तु पूरे भर चुके एक्सपेरिमेंटल थिएटर में मेरी नजर एक परिचित चेहरे पर पड़ी। मेरी तथाकथित इंटेलिजेंस तुरंत सक्रिय हुई, सवाल उठाया कि 'ये यहां कैसे? इनका तो इस कार्यक्रम से कोई संबंध नहीं है।' मैंने अंदाजा लगाया कि उनकी उम्र इस छोटे ऑडिटोरियम की कुल बैठक क्षमता की लगभग आधी होगी। फिर भी, वे पूरी तरह से उस शास्त्रीय नृत्य कला में खोए थे, जो तंजावुर जिले की विरासत है। इसी स्थान से मैं भी आता हूं। उसी क्षण मेरे दिमाग ने मुझे सोमवार के लेख का विषय दे दिया। दिमाग ने शो खत्म होते ही उनका इंटरव्यू लेने का निर्देश दिया। मेरा योजनाबद्ध और उत्सुकता भरा पहला सवाल यही होने वाला था कि 'आप यहां कैसे?' फिर लगा कि किसी वरिष्ठजन से ऐसा सवाल पूछना कितना मूर्खतापूर्ण होता। वे 73 वर्षीय अनंग देसाई थे, जिन्हें कल्ट-क्लासिक सिटकॉम 'खिचड़ी' में चिड़चिड़े लेकिन सबके चहेते परिवार के मुखिया 'बाबूजी' (तुलसीदास पारेख) के किरदार के लिए जाना जाता है। 100 से अधिक टीवी शो और 70 फिल्मों के करियर वाले देसाई का पालन-पोषण अहमदाबाद में हुआ। उनके पिता कार्डियोलॉजिस्ट और मां सिंगर व पेंटर थीं। अपनी कला को नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा तथा फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया में निखारने के कारण उनकी कलात्मक समझ बेहद गहरी है। बात की तो वे मुस्कराए और बोले, 'कला तो कला है। मुझे हर रूप में कला से प्रेम है।' वे इससे ज्यादा सही नहीं हो सकते थे। जो परफॉर्मेंस हमने देखी, वो तंजावुर क्वार्टेट से उपजी है। प्रिया मुरले, लेखा प्रसाद और स्नेहा महेश विशाल द्वारा प्रस्तुत यह नृत्य कला सर्फोजी-द्वितीय (1777-1832) के राजदरबार में विकसित हुई थी। सर्फोजी-द्वितीय तंजावुर के दूरदर्शी मराठा शासक थे, जिनके दौर में व्यापक सांस्कृतिक, शैक्षणिक और वैज्ञानिक पुनर्जागरण हुआ था। उनका दरबार उत्कृष्ट संगीतकारों, रचनाकारों और उन नट्टुवनारों को एक मंच पर लाया, जो मंजीरे बजा कर लयबद्ध बोलों के जरिए नर्तकों का मार्गदर्शन करते थे। कार्यक्रम की खूबसूरती कई अप्रत्याशित रूपों में सामने आई। प्रिया ने पैरों से नृत्य नहीं किया, बल्कि आंखों की अभिव्यक्ति से पूरी कहानी बताई। बेहद खूबसूरती से भगवान कृष्ण और कुचेला (सुदामा) की निःस्वार्थ मित्रता और दिव्यता जीवंत की। मैंने उनसे जाकर कहा, 'वाह, आज एहसास हुआ कि कोई सिर्फ आंखों से भी पूरी कहानी कह सकता है।' इसे भरतनाट्यम की भाषा में 'अभिनयम' कहते हैं। वहीं, लेखा और स्नेहा ने भगवान शिव की स्तुति में 'कीर्तनम' प्रस्तुत किया और उनकी जटिल, ब्रह्मांडीय मुद्राओं को अद्भुत सौंदर्य के साथ साकार किया। उस शाम मुझे एहसास हुआ कि ऐसे हेरिटेज आर्ट फॉर्म्स को मुख्यधारा का ऐसा मंच देना कितना मूल्यवान होता है, जहां वर्ल्ड क्लास थिएटर में वैश्विक मानकों की साउंड, लाइटिंग और मंच सज्जा हो। यह निश्चित ही विचारणीय है। 90 मिनट के कार्यक्रम के बाद मेरा मन दो वर्गों के प्रति कृतज्ञता से भर गया। पहले, वे समृद्ध लोग जिन्होंने ऐसा ठिकाना बनाया और उभरती प्रतिभाओं के लिए इसे खोला, ताकि संस्कृति फल-फूल सके। दूसरे, वे बुद्धिमान दर्शक जिन्होंने हर सीट भर दी, कला को समझा और सही समय पर तालियां बजाईं। इससे कलाकारों को लगा कि वे ऐसे दर्शकों के सामने प्रस्तुति दे रहे हैं, जो कला की बारीकियों को अच्छे-से समझते हैं। अनंग देसाई इस दूसरे वर्ग का एक शानदार उदाहरण थे। फंडा यह है कि कला की एक यूनिवर्सल भाषा होती है, जो हर भाषाई सीमा के परे है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक हमारी समृद्ध विरासत को सच में सुरक्षित रखना है तो अमीरों को आर्थिक सहायता देकर ऐसे ठिकाने मुहैया कराने होंगे, जहां संस्कृति फल-फूल सके और शिक्षित लोगों को उसे जिंदा रखने के लिए बौद्धिक सराहना देनी होगी।एन. रघुरामन

शहरों का दिल कभी गांवों के जैसा नहीं हो सकता

'नानी, मैं स्कूल जा रहा हूं!' मैं दरवाजे से चिल्लाकर कहता था और हर सुबह, उनकी तेज लेकिन प्यार से भरी हुई आवाज लौटकर आती थी : 'कितनी बार समझाऊं? ऐसा कभी नहीं कहते हैं कि मैं जा रहा हूं, कहो कि मैं स्कूल जाकर आता हूं।' मैं उनकी ओर देखे बिना मन ही मन में कभी नहीं बुदबुदाता कि 'क्या फर्क पड़ता है?' और मैं वही दोहरा देता जो उन्होंने कहा था और भाग जाता। वे दो शब्द- 'आता हूं'- सुरक्षा और आश्वासन का एक अलिखित अनुबंध थे, जिस पर हमारे बुजुर्ग भरोसा करते थे। उन्हें दरवाजे पर खड़े होकर वेव करने या चुंबन उछालने की जरूरत नहीं होती थी। वे हमें जाते हुए बेचैन आंखों से नहीं देखते थे। ये वो दिन थे जब हमारे पास कुछ भी नहीं था और इसके बावजूद हमारे पास किसी चीज की कमी नहीं थी। वे हमें नंगे पांव और खुले दिल से दुनिया में जाने देते थे, इस विश्वास के साथ कि गांव हमें सकुशल लौटा लाएगा। अगर हमारे पैर कीचड़ से भर जाते, तो हम रोते नहीं थे; बस सड़क किनारे लगे हैंडपंप से पानी निकालकर मिट्टी धो देते और कक्षा के फर्श पर आलथी-पालथी मारकर

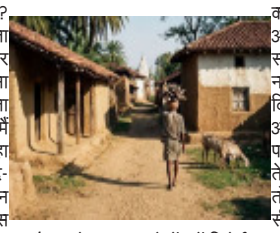

बैठ जाते। उस जमाने में हमें रिपोर्ट कार्ड की भी कोई चिंता नहीं होती थी। केवल पास या फेल मायने रखता था। तब किसी बुजुर्ग से डांट खाना रोजमर्रा की बात थी, इससे किसी को कोई मनोवैज्ञानिक आघात नहीं लगता था। अगर शरारत करने पर कोई बिल्कुल अनजान व्यक्ति हमारे कान उमेठ देता था, तो हम वकील तलाशने नहीं निकलते थे- हम उसे स्वीकार कर लेते थे। गांव सोशल-पैरेंटिंग की परंपरा निभाता था। हम सभी के थे। तब हमारे लिए शर्म की सबसे बड़ी निशानी क्या थी? ट्यूशन जाना।1960 के दशक में अतिरिक्त कक्षाओं का मतलब यह था कि आप पहली बार में किसी बात को समझने के लिए पर्याप्त होशियार नहीं हैं। और हमारी सबसे बड़ी विलासिता क्या थी? साइकिल की आगे वाली रॉड या जंग लगे कैरियर पर बैठकर धूल भरी पगडंडियों पर तेजी से चलते चले जाना और फल तोड़ने के लिए साइकिल को किसी सीढ़ी की तरह इस्तेमाल करना। तब हमें ऐसा लगता था जैसे हमने पूरी दुनिया जीत ली हो। वो ऐसे दिन थे, जब अव्वल दर्जे की उम्मीदें सेकंड-हैंड किताबों में रहती थीं। हम किताबों के पन्नों के बीच मोरपंख और पीपल के सूखे पत्ते दबाकर रखते थे, यह भोला विश्वास करते हुए कि इससे हम बुद्धिमान बन जाएंगे। उन नाजुक, कंकाल जैसे दिखने वाले पत्तों- जो फाइन-आर्ट की तरह लगते थे- में निहित हमारा यह विश्वास हमें वह चीज देता था, जो शहर शायद ही कभी दे पाते हैं- शुद्ध और बिना कोई मिलावट वाली उम्मीद। उस समय हर पाठ्यपुस्तक पर भूरे रंग के कवर चढ़ाए जाते थे और उन्हें कपड़े से बने झोलों में करीने से रखा जाता था, क्योंकि वे केवल हमारी नहीं थीं- उन्हें अगले साल 'थर्ड-हैंड' किताबों के रूप में बेचे जाने के लिए भी सहेज रखना होता था। आठवीं कक्षा तक मैंने सेकंड-हैंड किताबों से ही पढ़ाई की थी, जब तक कि उसके बाद पाठ्यक्रम नहीं बदल गया। फिर भी हमारे माता-पिता ने कभी पढ़ाई के बोझ की शिकायत नहीं की।जीवन सीमित साधनों वाला जरूर था, लेकिन उसमें हमें कभी ऐसा महसूस नहीं हुआ कि हम गरीब हैं। दक्षिण भारत के 'मंदिरों का शहर' कहलाने वाले कुम्भकोणम में- जहां मैंने प्राथमिक शिक्षा के वर्षों में अपना बचपन बिताया- संस्कृति किसी पाठ्यपुस्तक में नहीं सिखाई जाती थी; वह मिट्टी में ही रची-बसी थी। हर गली-मोहल्ले में मंदिर होने के कारण सड़कें स्वयं पवित्र लगती थीं।

पुलिस ने कहा-केतन जिंदा है तो सिया के हावभाव बदले, पिता बोले- शक हुआ जब सवालों के बीच बुआ सिया को खींच ले गई

पुणे। पुणे के केतन अग्रवाल मर्डर केस में उनके पिता विशाल अग्रवाल ने दावा किया कि घटना वाले दिन ही परिवार को सिया गोयल पर शक हो गया था। उन्होंने बताया कि मौके पर मौजूद महिला पुलिसकर्मी ने जब कहा कि केतन अभी जिंदा है। उसे तुरंत अस्पताल ले जाना चाहिए, तब सिया के हावभाव बदल गए। इसके बाद सिया ने परिवार के सवालों का भी कोई जवाब नहीं दिया। विशाल अग्रवाल ने दिव्य भास्कर से बताया कि 18 जून को सिया की मां का फोन आया कि केतन लोहगढ़ किले से गिर गया है। परिवार मौके पर पहुंचा तो केतन को खाई से निकालकर लाया जा चुका था। उन्होंने देखा कि केतन का मुंह बंधा हुआ था। चेहरा खुलवाकर पहचान की गई। सिया और केतन 18 जून को पुणे के लोहगढ़ किले पर घूमने गए थे। इसी दौरान केतन की खाई में गिरने से मौत हो गई। सिया पर अपने बॉयफ्रेंड चेतन चौधरी के साथ मिलकर मंगेतर की हत्या करने का आरोप है। दोनों फिलहाल पुलिस हिरासत में हैं और मामले की जांच जारी है। बुआ सिया को ले गई, तभी परिवार का शक गहराया:-केतन की बहन ने सिया से पूछा कि वह कहां बैठी थी, केतन कैसे गिरा और वह किले के उस किनारे तक कैसे पहुंचा। सिया ने किसी सवाल का जवाब नहीं दिया। उसका रोना भी परिवार को बनावटी लगा। अगले दिन जब वह उनके घर आई, तब भी परिवार ने पूछा कि केतन का कौन सा पैर फिसला था, लेकिन वह चुप रही। सवाल-जवाब के दौरान शादी तय कराने वाली सिया की बुआ उसे 'तू चल-चल' कहकर वहां से ले गई। इसके बाद परिवार का शक और गहरा हो गया। परिवार ने सीसीटीवी देखे, फिर पुलिस को सूचना दी:- विशाल अग्रवाल ने बताया कि उसी शाम परिवार ने बैठकर पूरी घटना पर चर्चा की। उनकी बेटी ने कहा कि कुछ ठीक नहीं लग रहा। इसके बाद परिवार ने पूरी घटना को जोड़कर देखा और सोसायटी के सीसीटीवी फुटेज भी खंगाले। उन्होंने बताया कि घर लौटते समय सिया रो भी नहीं रही थी। शक बढ़ने पर परिवार ने पुलिस को सूचना दी।फोन बिजी रहता था, केतन को शक हुआ था:-विशाल अग्रवाल ने कहा कि केतन को सिया के अफेयर की जानकारी नहीं थी। हालांकि, उसे कई बार सिया का फोन लगातार बिजी मिलने पर शक हुआ था। उसने परिवार से पूछा भी था कि क्या सिया के बारे में पूरी जानकारी ली गई है:-परिवार ने उसे भरोसा दिलाया कि रिश्तेदारों ने पूरी पड़ताल की है। इसके बाद उसने दोबारा इस बारे में बात नहीं की। उन्होंने कहा कि अगर अफेयर की जानकारी होती तो यह रिश्ता कभी तय नहीं होता। सिया-चेतन ने चैट डिलीट की, भाई से 10 घंटे पूछताछ:-पुलिस के मुताबिक, आरोपी सिया गोयल और चेतन चौधरी ने हत्या से पहले और बाद में अपने मोबाइल की चैट हिस्ट्री डिलीट कर दी थी। दोनों ने रीसायकल बिन भी खाली कर दिया था। डिलीट डेटा रिकवर करने के लिए मोबाइल फॉरेंसिक जांच के लिए भेजे गए हैं। पुलिस का दावा- विग और हकलाने की वजह से की हत्या:- पुलिस के मुताबिक, पूछताछ में सिया ने बताया कि उसे केतन का विग लगाना और हकलाना पसंद नहीं था। इसी वजह से उसने हत्या की साजिश रची। हालांकि, विशाल अग्रवाल ने इस दावे पर कहा कि शादी तय होने से पहले ही सिया और उसके परिवार को केतन के विग के बारे में जानकारी दे दी गई थी। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने मृतक के पिता विशाल अग्रवाल से मुलाकात की। राज्य सरकार ने परिवार की फास्ट ट्रैक कोर्ट में सुनवाई की मांग स्वीकार कर ली है। सिया की मां पूजा गोयल बोलीं- बेटी शादी को लेकर खुश थी:-इस मामले में कोई भी दोषी है तो उसे सबसे कड़ी सजा मिलनी चाहिए। अगर मेरी बेटी दोषी है, तो उसे भी उसी जगह से नीचे फेंक देना चाहिए, जहां से केतन को धक्का दिया गया था। परिवार को सिया और केतन की शादी से बहुत उम्मीदें थीं। केतन का परिवार भी सिया को बहुत प्यार और स्नेह देता था। सारे कार्यक्रम अच्छे से चल रहे थे। अगर हमें लगता कि सिया को कोई परेशानी हो रही है या वह केतन से बात नहीं कर पा रही है, तो वे हमसे बात करते। सिया की इस शादी में रजामंदी थी। हमें चेतन के बारे में कुछ भी पता नहीं था। सगाई के बाद से वह सिर्फ केतन से ही बात करती थी। मुझे नहीं लगता कि वह (अपराध करने के लिए) राजी हुई होगी। अगर जांच में मेरी बेटी भी दोषी पाई जाती है तो उसे भी उसी जगह से नीचे फेंक देना चाहिए, जहां से केतन को धक्का दिया गया था। पिता प्रवीण गोयल ने कहा- केतन ही सिया को लोहगढ़ ले गया था:- सिया ने मुझे खुद ही कहा था कि इस लड़के से मेरा रिश्ता करवा दीजिए। केतन ने ही सिया को फोन कर लोहगढ़ किला जाने के लिए कहा था। वही कार लेकर आया था। केतन सिया एक-दूसरे से बहुत प्यार करते थे। एक बार तो केतन सुबह 4 बजे ही सिया से मिलने घर आ गया था। केतन की हत्या के पहले कैफे में मिले थे सिया-चेतन:- केतन की हत्या के एक दिन पहले 17 जून को आरोपी सिया और प्रेमी चेतन चौधरी एक कैफे में मिले थे। न्यूज एजेंसी आईएएनएस ने पुलिस सूत्रों के हवाले से बताया कि यहीं लोहगढ़ किले पर केतन को खाई में धक्का देने का प्लान बनाया था। दोनों ने वह पॉइंट भी ढूंढ लिया, जहां से केतन को धक्का देना था। यदि केतन इससे भी बच जाता तो 20 जून के बाद सड़क हादसे में मारने का बैकअप प्लान तैयार था। दरअसल, 31 मई को सिया और मंगेतर केतन लोहगढ़ किले गए थे। वहां केतन एक खतरनाक जगह बैठा था। तभी सिया को उसे मारने का आइडिया आया। 14 जून को भी केतन को धक्का देने की कोशिश की गई थी। उस समय सिया ने सांप दिखने का बहाना बनाकर घटना को हादसा बताने की कोशिश की थी, लेकिन केतन बच गया था। 31 मई: सिया को केतन की हत्या का प्लान सूझा: 11 फरवरी को सगाई के बाद केतन, सिया को घर लेकर आता था, साथ घूमने ले जाता था। उसे ट्रैकिंग यानी पहाड़ी चढ़ने का शौक था। उसने सिया से ट्रैकिंग के लिए लोहगढ़ किले चलने को कहा। रिपोर्ट्स के मुताबिक जब दोनों किले की सबसे ऊंची चोटी पर पहुंचे, तो यहीं सिया को पहली बार केतन से पीछा छुड़ाने के लिए उसे पहाड़ी से धक्का देकर मार डालने का प्लान सूझा। 5 जून: किले पर जाने की जिद की, केतन नहीं गया: सिया ने 4 जून को केतन से दोबारा लोहगढ़ किला जाने की जिद की। तब केतन के घर वालों ने मना कर दिया। 6 जून को केतन, उनकी बहन, एक दोस्त और सिया के इंडोनेशिया के बाली जाने के टिकट बुक थे। सभी लोग फ्लाइट पकड़ने के लिए निकले। पुणे ग्रामीण के एसपी संदीप सिंह गिल के मुताबिक केतन के साथ बाली न जाना पड़े, इसलिए सिया ने उसका पासपोर्ट अपने पास अलग रख लिया था। 14 जून: दूसरी कोशिश, धक्का दिया, लेकिन केतन बच गया: सिया ने केतन से दोबारा किले पर चलने को कहा। बोली कि मुझे वह जगह पसंद है। पुलिस के मुताबिक 14 जून को दोनों किले पर पहुंचे। सिया ने केतन को एक जगह पीछे से धक्का दिया। पेड़ का सहारा मिलने से केतन बच गया। उसने पूछा- 'धक्का क्यों दिया? सिया ने कहा, 'एक सांप था, तुम्हें उससे बचाने के लिए धक्का दिया।' केतन ने घर आकर सबको बताया कि सिया की वजह से उसकी जान बच गई। 18 जून: तीसरी कोशिश में बॉयफ्रेंड के साथ मिलकर धक्का दिया: 19 जून को सिया का जन्मदिन मनाने के लिए केतन ने महाबलेश्वर में एक लग्जरी रिजॉर्ट बुक किया था। सिया ने उससे पहले केतन को प्री-वेडिंग फोटोशूट की बात कहकर लोहगढ़ किले पर जाने के लिए मना लिया। इस बार पीछे-पीछे चेतन भी था। एक जगह जब केतन पहाड़ियों की तरफ देख रहा था, तभी दोनों ने उसे पीछे से धक्का दे दिया। तीन सुराग; सिया का झूठ, सीसीटीवी फुटेज, 2004 बार कॉल:-पहला सुराग: सिया के हावभाव से केतन की बहन को शक हुआ:-21 जून को सिया केतन के घर पहुंची। केतन की बहन ने पूछा- केतन कैसे गिरा? इस सवाल पर सिया के हावभाव अचानक बदल गए। वो ठीक से जवाब नहीं दे पा रही थी। केतन की बहन को शक हुआ और उसने पिता विशाल अग्रवाल से कहा- भाई अच्छा ट्रैकर है, उसकी मौत एक्सीडेंट नहीं हो सकती। सिया ठीक से जवाब नहीं दे रही। विशाल को भी पहले से शक था कि कुछ तो ठीक नहीं है। इसके बाद विशाल दोबारा पुणे पुलिस से मिले और सिया पर शक जताया। उन्होंने ये भी कहा कि सिया किसी लड़के से बात करती है, उसकी भी जांच की जानी चाहिए। दूसरा सुराग: किले के सीसीटीवी फुटेज में गर्मी में हुडी पहने लड़का दिखा:-पुलिस ने लोहगढ़ किले के सीसीटीवी फुटेज निकाले। इनमें 18 जून को एक शख्स वहां पहुंचे केतन और सिया के आसपास कई बार दिखा। गर्मी का मौसम, ऊपर से किले की चढ़ाई, उसके बावजूद किले की सीढ़ियों के फुटेज में दिखा कि वो हुडी पहने था। पुलिस के मुताबिक, लड़का अपना चेहरा छिपाने की कोशिश कर रहा था। तीसरा सुराग: सिया की एक नंबर पर 2000 से ज्यादा कॉल्स:-पुलिस ने सिया के कॉल-रिकॉर्ड खंगाले। इनमें एक मोबाइल नंबर पर जनवरी से केतन की हत्या वाले दिन सुबह 7 बजे तक सिया ने 2004 कॉल में करीब 338 घंटे की बातचीत की थी यानी दोनों रोज करीब 11 कॉल्स में 2 घंटे बात करते थे। ये नंबर पुणे के ही एक और व्यापारी परिवार के लड़के चेतन चौधरी का था। चेतन का घर पुणे के उसी इलाके में था, जहां सिया के पिता का ऑफिस है।मर्डर की 2 वजह; दावा- सिया शादी के लिए तैयार नहीं थी:-सिया शादी के लिए तैयार नहीं थी: पुलिस को शक है कि मुख्य आरोपी सिया गोयल शादी के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं थी और परिवार के दबाव में केतन से शादी करने जा रही थी। इसी पहलू को पुलिस हत्या की संभावित वजहों में से एक मानकर जांच कर रही है। बदनामी के कारण प्रेमी के साथ भागी नहीं: प्रेमी चेतन ने बताया कि सिया सगाई तोड़कर भागने के पक्ष में नहीं थी। उसे लगता था कि इससे उसके परिवार की बदनामी होगी। केतन के मर्डर करने से पहले सिया ने सोशल मीडिया अकाउंट पर केतन अग्रवाल (26) के साथ कई रोमांटिक पोस्ट किए थे। कभी प्रपोजल की तस्वीरें, कभी फूल देकर प्यार जताने वाले पल, तो कभी डांस और गले मिलने के वीडियो। दोनों की नवंबर में होने वाली शादी की तैयारियां भी सोशल मीडिया पोस्ट का हिस्सा थीं। इस साल फरवरी में सगाई के बाद सिया ने इंस्टाग्राम पर एक केक की तस्वीर शेयर करते हुए लिखा था- मेरे दिल को उसका घर मिले एक महीना पूरा हुआ।

पासपोर्ट-आधार भी नागरिकता का सबूत नहीं, फिर कैसे तय होगा कि आप भारत के नागरिक?

नयी दिल्ली। ' विदेश मंत्रालय के अधिकारी का ये बयान सुर्खियों में है। सवाल उठ रहे हैं कि अगर पासपोर्ट नहीं, तो भारत के नागरिक होने का सबूत क्या है? क्या सरकार नागरिकता के लिए कुछ नया करने जा रही है। सवाल-1: क्या आधार, पैन, जन्म प्रमाणपत्र भी नागरिकता साबित नहीं करते? जवाब: पासपोर्ट की तरह ये सरकारी दस्तावेज भी नागरिकता के सबूत नहीं हैं- आधार कार्ड: आधार एक्ट, 2016 के सेक्शन 9 में कहा गया है कि आधार नंबर नागरिकता और निवास का सबूत नहीं है। आधार जारी करने वाली यूनिक आइडेंटिफिकेशन अथॉरिटी ऑफ इंडिया (यूआईडीएआई) ने भी बार-बार कहा है कि आधार सिर्फ पहचान पत्र है। इलेक्शन कमीशन, कलकत्ता और बॉम्बे हाईकोर्ट का भी यही रुख है। मतदाता पहचानपत्र: जनवरी 2026 में इलेक्शन कमीशन ने सुप्रीम कोर्ट में कहा कि वोटर आईडी नागरिकता साबित नहीं करता, यह सिर्फ वोट देने के लिए है। अगस्त 2025 में बॉम्बे हाईकोर्ट ने भी कहा कि वोटर आईडी कार्ड पहचान दस्तावेज है, न कि नागरिकता के सबूत। पैन कार्ड: आयकर अधिनियम, 2025 के तहत कोई भी विदेशी नागरिक या कंपनी, जिनका भारत में कारोबार है या जो यहां टैक्स के दायरे में हैं, वह पैन कार्ड बनवा सकते हैं। यह सिर्फ वित्तीय लेन-देन और टैक्स ट्रैकिंग के लिए है। बॉम्बे हाईकोर्ट ने भी साफ किया कि पैन कार्ड नागरिकता का प्रमाण नहीं है। राशन कार्ड:

2019 में गुवाहाटी हाईकोर्ट और 2024 में दिल्ली हाईकोर्ट ने कहा कि राशन कार्ड को नागरिकता का सबूत नहीं माना जा सकता। यह सिर्फ पते और वित्तीय स्थिति का प्रमाण है। जुलाई 2025 में इलेक्शन कमीशन ने भी सुप्रीम कोर्ट में दलील दी थी कि वोटर लिस्ट में शामिल होने के लिए राशन कार्ड को सबूत नहीं माना जा सकता और नागरिकता साबित करने के लिए पुख्ता सबूत मांगे। ड्राइविंग लाइसेंस: ड्राइविंग लाइसेंस केवल पहचान पत्र है, जो वाहन चलाने की इजाजत देता है। मोटर व्हीकल्स एक्ट, 1988 के तहत, भारत में वीजा पर आए विदेशियों को भी ड्राइविंग लाइसेंस जारी किया जाता है। इसका नागरिकता से कोई लेना-देना नहीं। जन्म प्रमाण-पत्र: 2013 में बॉम्बे हाईकोर्ट में कहा कि केवल जन्म प्रमाण पत्र नागरिकता के लिए पर्याप्त नहीं है। ये सिर्फ जन्म की तारीख और जगह का सबूत है। नागरिकता कानून के मुताबिक भी सिर्फ इसे नागरिकता का आखिरी सबूत नहीं माना जा सकता। हालांकि जन्म प्रमाण पत्र और पासपोर्ट को लेकर दो विरोधाभासी बातें भी हैं-2019 में केंद्र सरकार ने कहा था कि नागरिकता के लिए जन्म की तारीख और स्थान की पुष्टि करने वाले दस्तावेज दिए जा सकते हैं, जिसमें जन्म प्रमाण पत्र भी है। 2025 में वोटर लिस्ट के स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन, यानी एसएआर एसआईआर पर सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने इलेक्शन कमीशन से कहा- आपके द्वारा बताए 11 दस्तावेजों की लिस्ट में पासपोर्ट और जन्म प्रमाण पत्र के अलावा नागरिकता का कोई निर्णायक सबूत नहीं है। सवाल-2: तो फिर कैसे साबित होगा कि आप भारत के नागरिक हैं? जवाब: अगस्त 2025 में यही सवाल लोकसभा में सीपीआई (एमएल) के सांसद सुदामा प्रसाद ने पूछा था। तब गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय ने लिखित जवाब दिया कि 1955 के नागरिकता अधिनियम के हिसाब से भारतीय नागरिकता तय होती है। दरअसल, भारत में नागरिकता साबित करने के लिए कोई सिंगल यूनिवर्सल डॉक्यूमेंट जारी नहीं किया जाता। नागरिकता (संशोधन) अधिनियम, 2003 के मुताबिक, जन्मतिथि के हिसाब से नागरिकता अलग-अलग दस्तावेजों से तय होती है:- 1 जुलाई 1987 से पहले: इस दौरान जन्मे लोग सिर्फ भारत में जन्म लेने के आधार पर भारतीय नागरिक हैं। इनका जन्म प्रमाण पत्र नागरिकता का पुख्ता सबूत है। 1 जुलाई 1987 से 3 दिसंबर 2004 के बीच: इस दौरान जन्मे लोगों की नागरिकता के लिए केवल भारत में जन्म लेना काफी नहीं, बल्कि उनके जन्म के वक्त माता-पिता में से किसी एक का भारतीय नागरिक होना जरूरी है। 3 दिसंबर 2004 के बाद: इस दौरान जन्मे व्यक्ति के जन्म के वक्त या तो माता-पिता दोनों भारतीय नागरिक हों या माता-पिता में से एक भारतीय नागरिक हो और दूसरा 'अवैध अप्रवासी' न हो। हालांकि 1955 के नागरिकता कानून के तहत विदेशी लोगों से जुड़े मामलों में कुछ खास नियमों से नागरिकता दी जाती है:-धारा 5, रजिस्ट्रेशन: उन्हें जिनका भारत से कोई जुड़ाव हो। जैसे- कोई विदेशी महिला या पुरुष जो किसी भारतीय से शादी करे। धारा 6, नेचुरलाइजेशन: विदेशी नागरिकों के लिए, जो तय वक्त तक भारत में रहे हों। जैसे- पाकिस्तानी मूल के गायक अदनान सामी को भारतीय नागरिकता मिली। सवाल-3: क्या सरकार नागरिकता का कोई रजिस्टर बनाने वाली है? जवाब: नहीं। फिलहाल ऐसी कोई कवायद शुरू होने की जानकारी नहीं है। हालांकि सरकार काफी समय से पूरे देश में 'नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटिजनशिप' यानी एनसीआर लागू करना चाहती है, लेकिन ये अभी सिर्फ असम में लागू हुआ है। इसे समझने के लिए पहले दो चीजें समझिए:- पहला, सीएए: 2019 में संसद से सिटिजनशिप एमेंडमेंट एक्ट, यानी सीएए पास हुआ। इसके तहत 1955 के नागरिकता कानून में ये प्रावधान शामिल हुआ कि 31 दिसंबर 2014 से पहले पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से भारत आने वाले गैर-मुस्लिम अल्पसंख्यक, यानी हिंदू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी और ईसाई भारत के नागरिक बन सकते हैं। इसमें मुस्लिम प्रवासी शामिल नहीं थे। 11 मार्च 2024 को ये कानून लागू हो गया है।दूसरा, एनसीआर: सीएए बिल के साथ ही एनसीआर, यानी 'नेशनल रजिस्टर ऑफ सिटिजनशिप' की चर्चा शुरू हुई थी। यानी एक ऐसा रजिस्टर, जिसमें देश के सारे नागरिकों का लेखा-जोखा हो। केंद्र सरकार का प्लान था कि पहले सीएए लागू होगा, उसके बाद पूरे देश में एनसीआर लागू किया जाएगा। 20 नवंबर 2019 को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने संसद में कहा, 'मान के चलिए एनआरसी आने वाला है। हम पूरे देश में एनआरसी पेश करेंगे, इस पर सदन में चर्चा कर सकते हैं। नागरिकता बिल को एनआरसी से जोड़ने की कोशिश न करें।' बीजेपी के 2019 के घोषणापत्र में भी कहा गया था घुसपैठ से प्रभावित राज्यों और फिर चरणबद्ध तरीके से पूरे देश में एनआरसी लागू किया जाएगा। हालांकि अब तक ऐसा नहीं हुआ है। 2019 में सिर्फ असम में एनआरसी के तहत नागरिकता रजिस्टर बनाया गया। इसके चलते असम में 31 अगस्त 2019 को जारी हुई नागरिकता की लिस्ट में से 19 लाख लोग बाहर हो गए। सवाल-4: सरकार ने अभी तक नागरिकता का रजिस्टर क्यों नहीं बनाया? जवाब: इसकी 3 बड़ी वजहें हैं:- 1. एनआरसी का विरोध, सरकार ने अपना एजेंडा बदला

11 दिसंबर 2019 को सीएए बिल पास होने के बाद 2019 में इसे एनआरसी से जोड़कर इसका व्यापक विरोध किया गया। कहा गया कि ये देश के मुसलमानों की नागरिकता छीनने के कानून हैं। दिल्ली के शाहीन बाग में 101 दिनों तक विरोध प्रदर्शन चला। तब की पश्चिम बंगाल और केरल जैसी गैर-बीजेपी राज्य सरकारों ने भी इसका विरोध किया और कहा कि अपने यहां इसे लागू नहीं होने देंगे। इससे सरकार पर राजनीतिक दबाव बढ़ा। सरकार ने कई बार कहा कि प्रवासियों की नागरिकता से जुड़े सीएए कानून का देश की नागरिकता के रजिस्टर, यानी एनआरसी या देश के अल्पसंख्यकों से कोई लेना-देना नहीं है। ये भी कहा कि पूरे देश में एनआरसी पर अभी कोई फैसला नहीं लिया गया है। अमित शाह के नेशनवाइड एनआरसी लागू करने वाले बयान के उलट 22 दिसंबर 2019 को पीएम मोदी ने भी कहा, 'मैं देश के लोगों को बताना चाहता हूं कि 2014 में मेरी सरकार के सत्ता में आने से अब तक एनआरसी पर कोई चर्चा नहीं हुई है। हमें सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों का पालन करने के लिए इसे केवल असम में लागू करना पड़ा।' कोविड के दौरान विरोध प्रदर्शन रुक गए और ये मुद्दा ठंडे बस्ते में चला गया, लेकिन अभी भी सुप्रीम कोर्ट में नागरिकता के कानून, असम में एनआरसी से जुड़े मुद्दों को लेकर सैकड़ों याचिकाएं लंबित हैं। बीजेपी ने 2024 लोकसभा के घोषणापत्र में भी एनआरसी का जिक्र नहीं किया है। 2. असम की एनआरसी लिस्ट वैध नहीं, कई गलतियां निकलीं 2019 में सुप्रीम कोर्ट की निगरानी में बनी असम की एनआरसी लिस्ट से जो 19.06 लाख लोग बाहर हुए, उनमें करीब 5.5 लाख हिंदू और 11 लाख से ज्यादा मुसलमान शामिल थे। असम की तब की बीजेपी सरकार में सीएम सर्बानंद सोनोवाल जैसे कई बीजेपी नेताओं ने भी लिस्ट में कई गलतियों की बात कही। 10 मई 2021 को असम के नए सीएम बने हिमंता बिस्व सरमा ने भी लिस्ट में गलतियों की बात कही और गलतियां दूर करने के लिए दोबारा लिस्ट का वेरिफिकेशन करने की बात कही। गलतियों के चलते ही इस एनआरसी को पूरी कानूनी वैधता भी नहीं मिल पाई, क्योंकि रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया ने इसका नोटिफिकेशन जारी नहीं किया। 3. नागरिकता के रजिस्टर के लिए जनसंख्या का रजिस्टर बनना जरूरी- पूरे देश में एनआरसी लागू करने के लिए नेशनल पॉपुलेशन रजिस्टर, एनपीआर, यानी आबादी का नए सिरे से पूरा लेखा-जोखा होना जरूरी है। एनपीआर जनगणना के साथ ही तैयार किया जा सकता है। 2019 में केंद्र सरकार ने बजट में एनपीआर के लिए 3,941 करोड़ रुपए और जनगणना के लिए 8,754 करोड़ रुपए मंजूर किए थे। हालांकि कोविड के चलते जनगणना का काम शुरू नहीं हो पाया। फिर 2025 के केंद्रीय बजट में भी जनगणना करवाने के लिए 11,718 करोड़ रुपए आवंटित किए, लेकिन एनपीआर के लिए अलग से कोई बजट नहीं रखा गया। अब 2026-27 के बजट में जनगणना 2027 और एनपीआर के लिए कुल 6,000 करोड़ आवंटित किए गए। जनगणना के तहत 1 अप्रैल से 1 सितंबर के जनगणना के तहत हाउसलिस्टिंग फेज चल रहा है। हालांकि इसके नोटिफिकेशन में एनपीआर का कोई जिक्र नहीं है। 30 मार्च 2026 को भारत के रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त, मृत्युंजय कुमार नारायण ने साफ कहा है कि जनगणना के दौरान एनपीआर का कोई फैसला नहीं लिया गया है, और न ही आगे जनगणना का एनपीआर से कोई लेना-देना होगा। सवाल-5: दुनिया के दूसरे देशों में नागरिकता कैसे तय होती है? जवाब: दुनिया में नागरिकता तय करने के दो ही प्रमुख सिद्धांत हैं-1. मिट्टी का अधिकार: जहां पैदा हुए, उसी देश की नागरिकता। माता-पिता की नागरिकता से कोई फर्क नहीं पड़ता। जैसे- अमेरिका, कनाडा, मेक्सिको। 2. खून का अधिकार: माता-पिता की नागरिकता से नागरिकता तय होती है, चाहे जन्म कहीं भी हो। जैसे- सऊदी अरब, जापान और चीन। हालांकि भारत समेत तमाम देशों में दोनों सिद्धांतों का मिला-जुला सिस्टम अपनाया जाता है, यानी जन्म के साथ-साथ माता-पिता की नागरिकता भी देखी जाती है। नागरिकता साबित करने वाले दस्तावेज भी दुनिया में अलग-अलग हैं। जैसे- अमेरिका का सिस्टम सबसे साफ है। वहां पासपोर्ट, जन्म प्रमाण पत्र, सिजिटेनशिप सर्टिफिकेट जैसा हर दस्तावेज नागरिकता का सबूत है। ब्रिटेन में तीन दस्तावेजों में से कोई एक होना नागरिकता का सबूत है- ब्रिटिश पासपोर्ट, यूके बर्थ सर्टिफिकेट या नेचुरलाइजेशन का सर्टिफिकेट। जर्मनी में अलग से सर्टिफिकेट ऑफ नेशनैलिटी लेना पड़ता है। इसके लिए जन्म प्रमाण पत्र, मैरिज सर्टिफिकेट और फैमिली रजिस्टर जैसे दस्तावेज देने पड़ते हैं। ऑस्ट्रिया और क्रोएशिया जैसे कुछ देश अलग से सिटिजनशिप सर्टिफिकेट जारी करते हैं, जो नागरिकता का एकमात्र आधिकारिक दस्तावेज है।

चंपत राय के इस्तीफे की कहानी लिखी गई हरिद्वार में, आरएसएस ने चोरी पर लगाई फटकार

अयोध्या। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महासचिव चंपत राय और ट्रस्टी डॉ. अनिल मिश्रा ने अपने पद से इस्तीफा दबाव में दिया। इसकी स्क्रिप्ट 8 दिन पहले हरिद्वार में लिखी गई। विश्व हिंदू परिषद की 18 और 19 जून को हरिद्वार में बैठक थी। इसमें अयोध्या से चंपत राय और गोपाल राव शामिल हुए थे। सूत्र बताते हैं, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने दोनों से राम मंदिर चढ़ावा चोरी की जानकारी ली। चढ़ावे के हिसाब-किताब में हेराफेरी को लेकर दोनों को फटकार लगाई थी। बैठक के बाद चंपत राय पर दबाव बढ़ने लगा। संघ के बड़े पदाधिकारियों ने उनसे दूरी बना ली। 19 जून को सीएम योगी अयोध्या दौरे पर गए थे। उस वक्त चंपत राय को सीएम के कार्यक्रमों से दूर रखा गया था। लगातार किरकिरी और बढ़ते दबाव को देखकर चंपत राय और अनिल मिश्रा ने आखिरकार शुक्रवार को अपना इस्तीफा ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास को सौंप दिया। पूरी रात चंपत राय के पास आरएसएस और विहिप नेताओं के फोन आए:- 7 जून को राम मंदिर में चढ़ावा चोरी का मामला सामने आया था। इसके 18 दिन बाद ट्रस्ट के 8 लोगों पर एफआईआर हुई। इसमें ट्रस्ट के बड़े चेहरों के नाम नहीं थे। इसको लेकर सोशल मीडिया पर किरकिरी होने लगी। विपक्षी पार्टियों के लोग बयानबाजी करने लगे कि बड़े लोगों को बचा लिया गया। चंपत राय के पास आरएसएस और विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के नेताओं के फोन गुरुवार को पूरी रात आते रहे। कुछ नेताओं ने उन्हें इस्तीफा देकर मामला शांत करने की सलाह दी। इसके बाद चंपत राय ने शुक्रवार सुबह पूजा-पाठ किया। फिर मणि रामदासजी की छावनी पहुंचे। ट्रस्टी डॉ. अनिल मिश्रा को भी बुलाया। सुबह करीब 11 बजे दोनों ने ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास को अपना इस्तीफा सौंप दिया। 1. शुरुआती जांच में भूमिका पर सवाल:- चढ़ावा चोरी की जांच के लिए बनी एसआईटी की शुरुआती जांच में दान, चढ़ावे और प्रबंधन से जुड़े मामलों में अनियमितताओं के संकेत मिले। चंपत राय भी संदेह के दायरे में हैं। 2. एफआईआर और गिरफ्तारियों से बढ़ा दबाव:- एसआईटी की रिपोर्ट के आधार पर पुलिस ने 8 नामजद आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की और उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेजा। इससे पूरे मामले ने गंभीर रूप ले लिया। 3. पूर्व ड्राइवर का नाम सामने आने से बढ़ीं मुश्किलें :- एफआईआर में चंपत राय के पूर्व ड्राइवर रामशंकर यादव उर्फ टिन्नू और उसके भतीजे मनीष का नाम भी शामिल है। आरोप है कि टिन्नू ने मंदिर से जुड़े कुछ लोगों के साथ मिलकर चढ़ावे में हेराफेरी की, जिससे मामला और संवेदनशील हो गया। 4. जांच पर सवाल न उठे, इसलिए इस्तीफा:-ट्रस्ट का मानना था कि अगर सीनियर पदाधिकारी अपने पद पर बने रहते हैं तो जांच की निष्पक्षता पर सवाल उठ सकते हैं। इसी कारण उन्होंने जांच एजेंसियों को स्वतंत्र रूप से काम करने का मौका देने के लिए पद छोड़ दिया। 5. राम मंदिर ट्रस्ट की साख बचाने की कोशिश:-राम मंदिर करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र है। ट्रस्ट नहीं चाहता था कि जांच के दौरान संस्था की विश्वसनीयता पर सवाल उठे, इसलिए पद छोड़ना उचित समझा। संतों की मांग- रामालय ट्रस्ट और निर्माण समिति के खर्च की भी जांच हो:-हरिद्वार में हुई विश्व हिंदू परिषद (विहिप) की बैठक में साधु-संतों ने कहा था कि न केवल श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की जांच हो, बल्कि ब्रह्मलीन स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती के रामालय ट्रस्ट और राम मंदिर मामले में निर्णय आने से पहले मंदिर निर्माण की गतिविधियों को चलाने के लिए

गठित श्रीराम जन्मभूमि निर्माण समिति के भी खातों और खर्च की जांच होनी चाहिए। इसलिए, अयोध्या में बैठक टालनी पड़ी:- चढ़ावा चोरी पर साधु-संतों में आक्रोश और स्थिति बिगड़ते देख विश्व हिंदू परिषद की केंद्रीय प्रबंध समिति की 26 जून से अयोध्या में होने वाली 4 दिवसीय बैठक टाल दी गई। ये बैठक कारसेवक पुरम में होनी थी। इसमें 44 प्रांतों के सभी सदस्यों को शामिल होना था। कागभुशुंडि और चांदी की ईंटों पर ट्रस्ट ने डैमेज कंट्रोल की कोशिश की:- पिछले दो-तीन दिन से कागभुशुंडि की प्रतिमा और चांदी की ईंटें गायब होने की बात सामने आई। 24 जून को अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया पर लिखा- अब दान में दिए गए 'कागभुशुंडि' के गायब हो जाने की निंदनीय खबर आई है। जिस तरह हर दिन 'चढ़ावा-चंदा-दान' चोरी का नया भंडाफोड़ हो रहा है, उसे देखकर नेपाल और बाकी बॉर्डर बंद कर देने चाहिए, जिससे आरोपी फरार न हो सकें। शुक्रवार को राज्यसभा सांसद संजय राउत ने 'एक्स' पर पूछा- राम मंदिर के लिए उद्धव की दान की हुई 4 किलो चांदी कहां गई? अब जवाबदेही तय करने का समय आ गया है। इसके बाद ट्रस्ट की ओर से फोटो जारी कर दावा किया गया कि कागभुशुंडि कारसेवकपुरम में रखी है। चांदी की ईंटें बैंक लॉकर में सुरक्षित हैं। विहिप के अध्यक्ष बोले- ट्रस्ट को भंग करने की जरूरत नहीं:-विश्व हिंदू परिषद को अब डर सता रहा है कि सरकार राम मंदिर पर अपना कंट्रोल कर सकती है। विहिप के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार ने कहा- फिलहाल मुझे नहीं लगता कि राम मंदिर ट्रस्ट को भंग करने या नई कमेटी बनाने की आवश्यकता है, क्योंकि आरोप केवल कुछ व्यक्तियों पर हैं, पूरे ट्रस्ट पर नहीं। आलोक कुमार ने कहा- इस पूरे मामले में सबसे जरूरी मंदिर की व्यवस्थाओं में सुधार करना है। सभी प्रक्रियाओं में आधुनिक तकनीक, उपकरण और निगरानी व्यवस्था अपनाई जानी चाहिए, ताकि भगवान राम की संपत्ति सुरक्षित रहे, श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं मिलें और मंदिर का संचालन पूरी पारदर्शिता के साथ हो।एसआईटी जांच और एफआईआर पर उठ रहे सवालों के जवाब में आलोक कुमार ने कहा- मैंने एफआईआर देखी है, जिसमें पूरे मामले की व्यापक जांच का उल्लेख है। आठ नामजद आरोपियों के साथ 'अन्य' भी लिखा गया है, जिससे स्पष्ट है कि जांच किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रहेगी। उन्होंने कहा, जिन-जिन लोगों पर आरोप हैं, उन सभी की निष्पक्ष और पूरी जांच की जाएगी।

हेल्दी वोकल कॉर्ड्स के 9 टिप्स

आवाज में अचानक बदलाव किसी बीमारी का इशारा तो नहीं, ये बदलाव दिखे तो तुरंत डॉक्टर से मिलें

नयी दिल्ली। हम आवाज को सिर्फ कम्युनिकेशन का जरिया मानते हैं, लेकिन यह हमारी सेहत का एक अहम संकेत भी है। आमतौर पर सर्दी-जुकाम या थकान होने पर आवाज में हल्का बदलाव होता है। कई बार आवाज में बदलाव डायबिटीज, थायरॉइड, हार्ट डिजीज या न्यूरोलॉजिकल प्रॉब्लम्स का इशारा भी हो सकता है। दरअसल आवाज ब्रेन, लंग्स और वोकल कॉर्ड्स के कोऑर्डिनेशन से बनती है। इसलिए इनमें किसी भी गड़बड़ी का असर तुरंत आवाज पर दिखता है। ऐसे में सवाल ये है कि आवाज में हो रहे कौन-से बदलाव सामान्य हैं और किन्हें नजरअंदाज नहीं करना चाहिए? आज जानेंगे कि आवाज कैसे सेहत का हाल बताती है। साथ ही जानेंगे कि- आवाज में किस तरह के बदलाव गंभीर हो सकते हैं? आवाज में कौन-से बदलाव किस बीमारी का संकेत हैं? डॉ. राजुल अग्रवाल डायरेक्टर, न्यूरोलॉजी, श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट, दिल्ली जी के साथ और समझेंगे अच्छे से सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- हमारी आवाज शरीर के किन ऑर्गन्स पर निर्भर करती है? जवाब- आवाज एक न्यूरो-मस्कुलर और रेस्पिरेटरी प्रक्रिया है, जिसमें कई अंग मिलकर काम करते हैं। ब्रेनः बोलने का कंट्रोल सेंटर है, जो सांस, मसल्स और आवाज को निर्देश देता है। फेफड़ेः हवा का दबाव बनाते हैं, जो आवाज की ऊर्जा का मुख्य सोर्स है। वोकल कॉर्ड्स (लैरिंक्सः हवा के गुजरने पर कंपन करते हैं और आवाज पैदा करते हैं। जीभ, होंठ और दांतः आवाज को स्पष्ट शब्दों में बदलते हैं, इसे आर्टिक्युलेशन कहते हैं। नाक और गलाः आवाज की गूंज, टोन और क्वालिटी तय करते हैं। सवाल- क्या आवाज में अचानक बदलाव किसी छिपी हुई हेल्थ कंडीशन का संकेत हो सकता है? जवाब- आवाज में अचानक बदलाव अंदरूनी समस्या का संकेत हो सकता है। हमारी आवाज ब्रेन, नर्व्स और रेस्पिरेटरी सिस्टम से जुड़ी होती है। इसलिए कई बार बदलाव का कारण गंभीर भी हो सकता है। सवाल- आवाज में किस तरह के बदलाव कॉमन हैं? जवाब- आवाज में हल्के बदलाव सर्दी-जुकाम, एलर्जी, डिहाइड्रेशन या ज्यादा बोलने के कारण हो सकते हैं। आवाज बैठना (होर्सनेसः): आवाज भारी या भर्राई लगती है।आवाज कमजोर होनाः आवाज धीमी या कम स्पष्ट हो जाती है। पिच में बदलावः आवाज ऊंची या नीची हो सकती है। फुसफुसाती या टूटी आवाजः सांस के साथ आवाज टूट सकती है। बोलने की स्पीड बदलनाः कभी तेज, कभी धीमी हो सकती है। खराश या म्यूकसः गले में बलगम से स्पष्टता कम हो जाती है। कुछ बदलाव गंभीर बीमारी के शुरुआती संकेत हो सकते हैं, इसलिए इन्हें नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। नीचे ग्राफिक में दिए लक्षण स्ट्रोक, न्यूरोलॉजिकल डिजीज या कैंसर से जुड़े हो सकते हैं। इसमें तुरंत डॉक्टर से सलाह लेना जरूरी है। ऐसे बदलाव हो तो डॉ से सलाह ले अचानक बोली लड़खड़ाना। शब्द स्पष्ट न निकलना। आवाज कमजोर, धीमी होना। एक ही टोन में बोलना। आवाज का बार-बार टूटना। खांसी के साथ खून आना। निगलने सास लेने में दर्द, खराश, बोलने में थकान। 2-3 हफ्ते से ज्यादा होर्सनेसः लगातार भारी या बैठी आवाज गले की समस्या का संकेत हो सकती है। अचानक बोली लड़खड़ानाः स्ट्रोक या न्यूरोलॉजिकल समस्या का संकेत हो सकता है। बोलने पर खांसी के साथ खूनः गले या फेफड़ों की गंभीर बीमारी का रिस्क हो सकता है। कमजोर या मोनोटोन आवाजः नर्सों या ब्रेन से जुड़ी समस्या का संकेत हो सकता है। सांस लेने में दिक्कतः रेस्पिरेटरी सिस्टम की समस्या का संकेत है। सवाल- क्या आवाज में आए बदलाव को आइडेंटिफाई कर बीमारियां भी डायग्नोज की जा सकती हैं? जवाब- हां, आवाज में बदलाव का एनालिसिस कर कुछ बीमारियों के संकेत पहचाने जा सकते हैं। हाल के वर्षों में वॉइस एनालिसिस और एआई टेक्नीक्स पर तेजी से रिसर्च हुई है। ये टेक्नीक्स आवाज की पिच, स्पीड और कंपन का एनालिसिस करती हैं। आवाज के कंपन से कोरोनरी आर्टरी डिजीज के रिस्क के संकेत मिल सकते हैं। स्पीच पैटर्न से डिमेंशिया और पार्किंसन के शुरुआती लक्षण पहचाने जा सकते हैं। हालांकि, यह केवल स्क्रीनिंग टूल है, जिससे व्यक्ति जल्दी-जल्दी बोलता है। स्किजोफ्रेनियाः आवाज टूटी-फूटी या मोनोटोन हो सकती है। ये बदलाव लंबे समय तक बने रहें तो मेंटल हेल्थ एक्सपर्ट से सलाह जरूर लें। सवाल- पार्किंसन, अल्जाइमर्स जैसी न्यूरोलॉजिकल बीमारियों में आवाज से किस तरह के संकेत मिलते हैं? जवाब- न्यूरोलॉजिकल बीमारियों से ब्रेन और नर्व्स प्रभावित होती हैं, जिससे बोलने के लिए जरूरी मसल्स पर कंट्रोल कम हो जाता है। पार्किंसन डिजीजः आवाज धीमी, मोनोटोन, कम वॉल्यूम और सांस भारी होती है। वोकल कॉर्ड्स में हल्का कंपन (ट्रेमर) भी देखा जा सकता है। आवाज की स्पष्टता कम हो जाती है और शब्द साफ नहीं निकलते। अल्जाइमर्स/डिमेंशियाः बोलने की स्पीड धीमी हो जाती है और व्यक्ति बार-बार रुकता है। ब्रेन को शब्द खोजने में कठिनाई होती है, वाक्य छोटे और सरल हो जाते हैं। बातचीत में दोहराव बढ़ सकता है। सवाल- क्या आवाज में हर बदलाव बीमारी का संकेत होता है? जवाब- नहीं, ज्यादातर बदलाव अस्थायी कारणों से होते हैं और सही देखभाल से ठीक हो जाते हैं। सर्दी-जुकाम या एलर्जीः अस्थायी होर्सनेस (आवाज बैठना) कॉमन है। डिहाइड्रेशनः गला सूखने से आवाज भारी हो सकती है। ज्यादा बोलना/चिल्लानाः वोकल कॉर्ड्स पर दबाव पड़ने से आवाज बदलती है। कैफीन या अल्कोहलः गले को ड्राई करके आवाज प्रभावित कर सकते हैं। सवाल- क्या उम्र बढ़ने के साथ आवाज में बदलाव होना स्वाभाविक है? जवाब- हां, उम्र बढ़ने के साथ आवाज में बदलाव होना सामान्य है। इसे मेडिसिनल लैंग्वेज में 'प्रेस्बीफोनिया' कहा जाता है। आवाज में ताकत कम हो सकती है। हल्का कंपन महसूस हो सकता है। पहले की तुलना में आवाज धीमी हो जाती है।लंबे समय तक बोलने पर थकावट होती है। फेफड़ों की क्षमता घटने से ऐसा होता है। सवाल- अगर आवाज 2-3 हफ्ते से ज्यादा समय तक खराब है तो कौन-से टेस्ट जरूरी होते हैं? जवाब- यह किसी गंभीर समस्या का संकेत हो सकता है। सही कारण जानने के लिए ईएनटी (ईएनटी) एक्सपर्ट द्वारा कुछ जांच जरूरी होती है। लैरिंगोस्कोपीः कैमरे से वोकल कॉर्ड्स का स्ट्रक्चर और कंडीशन देखी जाती है।वीडियो स्ट्रोबोस्कोपीः वोकल कॉर्ड्स के कंपन और फंक्शनिंग का एनालिसिस होता है। ब्लड टेस्टः थायरॉइड या अन्य हॉर्मोन असंतुलन की जांच की जाती है। न्यूरोलॉजिकल रिव्यूः नर्व्स या ब्रेन से जुड़ी समस्या का पता लगाने के लिए यह टेस्ट होता है। पल्मोनरी टेस्टः रेस्पिरेटरी सिस्टम की स्थिति जांचने के लिए यह टेस्ट होता है।सवाल- आवाज और वोकल कॉर्ड को हेल्दी रखने के लिए क्या करें? जवाब- वोकल कॉर्ड की सेहत डेली लाइफस्टाइल की आदतों पर निर्भर करती है, सही देखभाल से समस्याएं रोकी जा सकती हैं.हल्की खराश है या आवाज बैठ गई है तो आमतौर पर कुछ दिनों में ठीक हो जाती हैं। लेकिन अगर ये बदलाव लंबे समय तक रहें या अन्य लक्षण के साथ हों, तो डॉक्टर से सलाह जरूरी है। जैसेकि- 2-3 हफ्ते से ज्यादा होर्सनेस रहे। खांसी के साथ खून आए। निगलने में दर्द/कठिनाई हो। सांस लेने में दिक्कत हो।अचानक बोली लड़खड़ाए। बहुत कमजोर या मोनोटोन आवाज हो।

खूबसूरती के लिए इंजेक्शन लगवाना, सीडीएससीओ ने बताया गैरकानूनी, नर्व डैमेज और एलर्जिक रिएक्शन का रिस्क, इससे दूर रहें

मुंबई। आजकल 'इंस्टेंट ग्लो' की चाह में कॉस्मेटिक इंजेक्शन और आईवी ड्रिप्स का ट्रेंड बढ़ा है। सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर्स, मॉडल्स और सेलिब्रिटीज को देखकर लोग ये ब्यूटी ट्रेंड्स अपना रहे हैं। लेकिन इंजेक्शन' कोई ऑफिशियल मेडिकल टर्म नहीं है। यह आम बोलचाल में इस्तेमाल होता है। सवाल- क्या ग्लो इंजेक्शन और कॉस्मेटिक इंजेक्शन एक ही चीज हैं? जवाब- नहीं, ये एक ही चीज नहीं हैं। ग्लो इंजेक्शन, मेडिकल कंडीशन्स (जैसे एंटीऑक्सिडेंट सपोर्ट) के लिए इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन ब्यूटी या स्किन लाइटनिंग के लिए इसका इस्तेमाल अप्रूव्ड नहीं है। सवाल- कॉस्मेटिक इंजेक्शन के क्या साइड इफेक्ट्स हो सकते हैं? जवाब- मेडिकल प्रोसीजर होने से इसके कई शार्ट और लॉन्ग टर्म साइड इफेक्ट्स हो सकते हैं। कॉस्मेटिक इंजेक्शन के साइड इफेक्ट्स- सुन्नपन, सांस लेने में दिक्कत, रेडनेस, सूजन, ब्लीडिंग, इंफेक्शन एलर्जिक रिएक्शन,चेहरे में टेढ़ापन, मसल वीकनेस, वेस्कुलर ऑक्लूजन सवाल- क्या इससे इन्फेक्शन हो सकता है? जवाब- हां, अगर-अनट्रेंड या अनक्वालिफाइड व्यक्ति इंजेक्शन दे। सुई या उपकरण रीयूज किए जाएं। इंजेक्शन के बाद स्किन की सही केयर न की जाए तो इन्फेक्शन का रिस्क बढ़ता है। का भी असर होता है। कॉस्मेटिक इंजेक्शन एक मेडिकल प्रोसीजर है। इसमें इन्फेक्शन, एलर्जी या नर्व डैमेज जैसे जोखिम पूरी तरह खत्म नहीं होते। इसलिए सिर्फ सेलिब्रिटी ट्रेंड के आधार पर इसे सुरक्षित मानना सही नहीं है। सवाल- आम लोगों के लिए ये ज्यादा खतरनाक क्यों है? जवाब- इसके कई कारण हैं, जैसे- कई लोग पार्लर से इंजेक्शन लगवा लेते हैं, जहां क्लिनिक जैसा स्टरलाइजेशन और सेफ्टी नहीं होती। मेडिकल हिस्ट्री, एलर्जी या स्किन टाइप का आंकलन नहीं होता। इंजेक्शन गलत जगह या गलत मात्रा में लग सकता है। रिएक्शन होने पर तुरंत इलाज की सुविधा नहीं होती। सही देखभाल न होने से इन्फेक्शन का रिस्क बढ़ता है। सवाल- ग्लोइंग स्किन पाने का बेस्ट तरीका क्या है? जवाब- ग्लोइंग स्किन के लिए महंगे इंजेक्शन जरूरी नहीं होते। सही स्किनकेयर, हेल्दी लाइफस्टाइल और सन प्रोटेक्शन से नेचुरल और लॉन्ग-लास्टिंग ग्लो पाया जा सकता है। सही खानपान से स्किन नेचुरली ग्लो करती है, जबकि गलत चीजें इसे डल और एक्ने-प्रोन बना सकती हैं। 'इंस्टेंट ग्लो' का आकर्षण भले ही बढ़ रहा हो, लेकिन सेफ और लंबे समय तक टिकने वाला निखार केवल सही स्किनकेयर, बैलेंस्ड डाइट, सन प्रोटेक्शन और हेल्दी लाइफस्टाइल से ही संभव है।

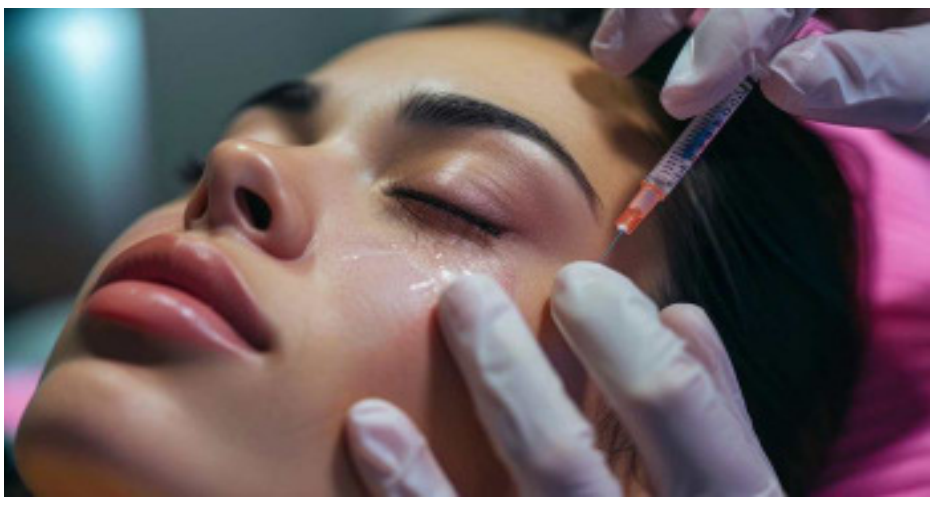

स्वत्वाधिकारी
एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स
53/25/1 ए बेली रोड
न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र) 211002 से
मुद्रित एवं सी-41यूपी
एसआईडीसी औद्योगिक
क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com
नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।